www.deshkiupasana.com

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक समाचार पत्र

RNI NO - UPHIN/2022/86937

जौनपुर से प्रकाशित

देश की उपासना

देश के विकास में समर्पित समाज के सभी वर्गों के लिए

DKU LIVE

सब पर नज़र, सबकी ख़बर

वर्ष – 05 | अंक – 07 | जौनपुर, गुरूवार, 20 अगस्त 2026 | सान्ध्य दैनिक (संस्करण) | पेज – 4 | मूल्य – 2 रूपये

संक्षिप्त खबरें

महाराष्ट्र में धर्मांतरण विरोधी कानून पर सपा और कांग्रेस ने जताई आपत्ति

नई दिल्ली, (एजेंसी)। समाजवादी पार्टी (सपा) और कांग्रेस ने गुरुवार को राज्य में महाराष्ट्र धर्म की स्वतंत्रता अधिनियम, 2026 को लागू करने का कड़ा विरोध किया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि मौजूदा कानून नागरिकों को अपनी मर्जी से धर्म बदलने की पूरी इजाजत देता है और इस तरह के कानून से सांप्रदायिक अशांति फैल सकती है।राज्य में सत्ताधारी महायुति सरकार के नेताओं ने कहा कि यह कानून उन लोगों के लिए जरूरी है जिन्हें धर्म के नाम पर गुमराह किया जाता है और फंसाया जाता है।महाराष्ट्र सरकार ने आधिकारिक तौर पर नोटिफाई किया है कि श्महाराष्ट्र धर्म की स्वतंत्रता अधिनियम, 2026श (जिसे आमतौर पर धर्मांतरण–विरोधी कानून कहा जाता है) 28 अगस्त से पूरे राज्य में लागू हो जाएगा। कार्यकारी मंजूरी मिलने के बाद राज्य के गृह विभाग ने 17 अगस्त को आधिकारिक नोटिफिकेशन जारी किया था। इसे लागू करने के साथ ही महाराष्ट्र भारत का 13वां ऐसा राज्य बन गया है, जिसने जबरदस्ती या धोखे से धर्म परिवर्तन पर रोक लगाने वाला कड़ा कानून बनाया है।सपा नेता एसटी हसन ने आईएएनएस से घ्घ्बात करते हुए कहा कि यह कानून के बुनियादी सिद्धांतों के खिलाफ है। अगर कोई बालिग पुरुष या महिला अपनी मर्जी से धर्म बदलना चाहता है तो कानून इसकी पूरी इजाजत देता है। अगर कोई दबाव या लालच में आकर धर्म बदलता है तो यह गलत है और ऐसा धर्म परिवर्तन बाद में रद्द कर दिया जाता है। हर किसी को अपना धर्म बदलने की आजादी है। लोग हिंदू धर्म से इस्लाम और इस्लाम से हिंदू धर्म में जा रहे हैं, और इस्लाम से ईसाई धर्म में भी जा रहे हैं। मुझे नहीं लगता कि यह कानून काम करेगा। इससे सांप्रदायिक सद्भाव और बिगड़ेगा।उन्होंने कहा, ष्इसलिए, हर व्यक्ति का अपना धर्म होता है और उसे उस पर गर्व होता है, लेकिन अगर कोई किसी की गरीबी का फायदा उठाकर उन्हें कुछ समय के लिए फायदे दे और फिर उनका धर्म बदलवा दे तो इसे कैसे सही ठहराया जा सकता है?

सीएम योगी ने कहा, मासिक मानदेय में करीब 1000 रुपये तक की बढ़ोतरी हो सकती

लखनऊ, (संवाददाता)। प्रदेश के परिषदीय विद्यालयों में बच्चों के लिए मिड डे मील तैयार करने वाले 3.53 लाख रसोइयों के मानदेय में जल्द बढ़ोतरी हो सकती है। शिक्षामित्रों और अनुदेशकों का मानदेय बढ़ाए जाने के बाद रसोइये भी लंबे समय से मानदेय बढ़ाने की मांग कर रहे हैं। इनके मासिक मानदेय में करीब 1000 रुपये तक की बढ़ोतरी हो सकती है। विधानसभा चुनाव से पहले सरकार इस संबंध में घोषणा कर सकती है। हालांकि अभी मिड डे मील प्राधिकरण की ओर से इसकी पुष्टि नहीं की गई है। प्रदेश के 1.32 लाख परिषदीय विद्यालयों में करीब 1.46 करोड़ विद्यार्थियों को मिड डे मील दिया जाता है। इसे तैयार करने की जिम्मेदारी रसोइयों की होती है। इन्हें पहले 1000 रुपये मासिक मानदेय मिलता था। वर्ष 2019 में इसे बढ़ाकर 1500 रुपये और वर्ष 2022 में 2000 रुपये किया गया था। इसके बावजूद रसोइयों का मानदेय अभी भी काफी कम माना जाता है। रसोइयों के मानदेय में केंद्र सरकार का हिस्सा 600 रुपये है। राज्य सरकार अपने हिस्से से इसमें लगातार बढ़ोतरी करती रही है। अब एक बार फिर मानदेय बढ़ाने की तैयारी है। रसोइयों को 2000 रुपये मासिक मानदेय के अलावा 500 रुपये यूनिफॉर्म और 400 रुपये ग्लव्स के लिए दिए जाते हैं। उत्तर प्रदेश के प्राथमिक और उच्च प्राथमिक परिषदीय स्कूलों में काम करने वाले रसोइयों को अभी 2,000 रुपये मासिक मानदेय मिलता है. शिक्षामित्रों और अनुदेशकों के मानदेय में बढ़ोतरी के बाद रसोइये भी अपने मानदेय में इजाफे की उम्मीद लगाए हुए हैं. सरकार की ओर से अगर प्रस्ताव को मंजूरी मिलती है तो करीब 3.53 लाख रसोइयों को इसका सीधा फायदा मिलेगा.रसोइयों के साथ ही परिषदीय प्राथमिक और उच्च प्राथमिक स्कूलों के शिक्षकों और कर्मचारियों के लिए भी राहत की खबर है।

मां दुर्गा, लक्ष्मी–सरस्वती से परहेज, कांग्रेस पर केशव मौर्य का हमला

लखनऊ, (संवाददाता)। उत्तर प्रदेश के उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने गुरुवार को कहा कि रस्सी जल गई, पर ऐंठन नहीं गई। गांधी परिवार और उसकी जेबी कांग्रेस का आज भी यही हाल है। 'वंदे मातरम्' के केवल दो छंद गाने के अपने 90 वर्ष पुराने निर्णय पर कांग्रेस वर्किंग कमेटी ने एक बार फिर मुहर लगा दी है। कट्टरपंथियों के दबाव में राष्ट्रगीत को अधूरा रखने की यही हठधर्मिता कांग्रेस को लगातार जनभावनाओं से दूर करती जा रही है। केशव प्रसाद मौर्य ने गुरुवार को अपने सोशल मीडिया पोस्ट में लिखा कि कांग्रेस को साफ करना चाहिए कि उसे मां दुर्गा, मां लक्ष्मी और मां सरस्वती के उल्लेख से परहेज क्यों है? वह किसे खुश करने के लिए राष्ट्रगीत के चार छंदों को छोड़ने पर अड़ी है? उसकी यह जिद 'एक्सीडेंटल हिंदू' वाली मानसिकता और छद्म धर्मनिरपेक्षता का असली चेहरा उजागर करती है। उप मुख्यमंत्री ने कहा कि गांधी परिवार के इशारों पर चलने वाली कांग्रेस का यह निर्णय किसी वैचारिक सिद्धांत से नहीं, बल्कि वोटबैंक और तुष्टीकरण की राजनीति से प्रेरित है। धर्म के आधार पर की गई राजनीति की भयावह कीमत देश विभाजन के रूप में चुका चुका है, लेकिन कांग्रेस आज भी राष्ट्रीय एकता के प्रतीक को धार्मिक वोटों के तराजू पर तौल रही है। केशव प्रसाद मौर्य ने कहा कि कांग्रेस को समझ लेना चाहिए कि देश अब तुष्टिकरण और वोटबैंक की संकीर्ण राजनीति से बहुत आगे बढ़ चुका है।

पीएम मोदी की मुफ्त कोचिंग पहल के क्रियान्वयन को लेकर केंद्रीय शिक्षा मंत्री ने समीक्षा बैठक की

नई दिल्ली, (एजेंसी)। केंद्रीय शिक्षा मंत्री प्रल्हाद जोशी ने प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे युवाओं को मुफ्त ऑनलाइन कोचिंग उपलब्ध कराने की प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की पहल के क्रियान्वयन को लेकर वरिष्ठ अधिकारियों के साथ समीक्षा बैठक की। प्रधानमंत्री मोदी ने पिछले शनिवार को स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर अपने संबोधन में इस पहल की घोषणा की थी। केंद्रीय मंत्री जोशी ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर कहा कि उच्च शिक्षा विभाग के अधिकारियों के साथ हुई बैठक का मुख्य मकसद "एक मजबूत राष्ट्रीय मंच बनाना था, जिससे देश भर के छात्रों को उच्च–गुणवत्ता वाली अध्ययन सामग्री, विशेषज्ञों का मार्गदर्शन और व्यवस्थित तैयारी की सुविधा मिल सके"। प्रधानमंत्री ने प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर रहे उम्मीदवारों के परिवारों पर आर्थिक बोझ कम करने के लिए मुफ्त ऑनलाइन कोचिंग की घोषणा की थी। पीएम मोदी ने 80वें स्वतंत्रता दिवस पर राष्ट्र को संबोधित करते हुए कहा था, "कोचिंग कक्षाएं गरीब और मध्यम वर्ग के परिवारों पर बोझ हैं। हम विभिन्न परीक्षाओं के लिए मुफ्त ऑनलाइन कोचिंग उपलब्ध कराएंगे।" उन्होंने कहा था, ''हर माता–पिता को लगता है कि अगर वे अपने बच्चे को कोचिंग कक्षा में नहीं भेजते हैं तो उनका परिवार प्रतिष्ठित नहीं माना जाएगा।'' पीएम– मोदी ने 15 अगस्त 2026 को अपने 80वें स्वतंत्रता दिवस के संबोधन में गरीब और मध्यमवर्गीय विद्यार्थियों के लिए मुफ्त ऑनलाइन कोचिंग पहल की घोषणा की।

भारत–जापान के बीच समुद्री सुरक्षा सहयोग पर समझौता, रक्षा मंत्रियों ने किए हस्ताक्षर

जापान, (एजेंसी)। भारत और जापान ने हिंद–प्रशांत क्षेत्र में शांति, स्थिरता और समृद्धि के लिए रक्षा सहयोग को और मजबूत करने पर सहमति जताई है। रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और जापान के रक्षा मंत्री शिंजिरो कोइजुमी ने 20 अगस्त को नई दिल्ली में द्विपक्षीय बैठक की। इस दौरान दोनों देशों के बीच समुद्री सुरक्षा सहयोग पर व्यवस्था संबंधी समझौते पर हस्ताक्षर किए गए, जो समुद्री सुरक्षा के क्षेत्र में आगे के सहयोग के लिए ढांचा उपलब्ध कराएगा। समझौते के तहत जापान मैरीटाइम सेल्फ–डिफेंस फोर्स और भारतीय नौसेना के बीच व्यावहारिक सहयोग को मजबूत किया जाएगा। इसमें समुद्री क्षेत्र से जुड़ी जानकारी साझा करने सहित अन्य गतिविधियां शामिल हैं। दोनों पक्षों ने समुद्री सुरक्षा के क्षेत्र में सेनाओं के बीच सहयोग बढ़ाने पर भी सहमति जताई। दोनों रक्षा मंत्रियों ने संयुक्त बयान में कहा कि भारत–जापान विशेष रणनीतिक और वैश्विक साझेदारी हिंद–प्रशांत में शांति, स्थिरता और समृद्धि के प्रमुख आधारों में से एक है। दोनों पक्षों ने समुद्री सुरक्षा, नौसेना सहयोग, रक्षा उपकरण एवं प्रौद्योगिकी, सैन्य अभ्यास और रक्षा उद्योग के क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने पर सहमति जताई। उन्होंने जुलाई 2026 में दोनों देशों के नेताओं की ओर से जारी संयुक्त बयान का भी उल्लेख किया। दोनों मंत्रियों ने मुक्त और खुले हिंद–प्रशांत के लक्ष्य को हासिल करने के लिए रक्षा सहयोग को और गहरा करने की प्रतिबद्धता दोहराई। मौजूदा वैश्विक तनाव के बीच उन्होंने क्षेत्रीय और अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा स्थिति पर एक–दूसरे के आकलन साझा करने को महत्वपूर्ण बताया। दोनों देशों ने नौवहन और हवाई उड़ान की स्वतंत्रता तथा सुरक्षा में बाधा डालने वाली किसी भी एकतरफा कार्रवाई का विरोध किया। उन्होंने बल या दबाव के जरिए यथास्थिति बदलने के किसी भी प्रयास का भी विरोध किया। इसके अलावा खोज एवं बचाव, मानवीय सहायता और आपदा राहत के क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने पर सहमति बनी।

वंदे मातरम विवाद पर भाजपा का कांग्रेस पर हमला, कहा- देश नहीं सहेगा भारत माता का अपमान

नई दिल्ली, (एजेंसी)। वंदे मातरम के गायन को लेकर कांग्रेस के हालिया फैसले पर सत्तापक्ष ने कड़ा ऐतराज जताया है। भाजपा नेताओं ने कहा कि कांग्रेस वोटबैंक की घटिया राजनीति कर रही है। भारत माता के इस अपमान को देश बर्दाश्त नहीं करेगा। केंद्रीय मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने गुरुवार को पटना में कहा, ष्हजारों क्रांतिकारियों ने वंदे मातरम का उद्घोष किया था, जिन्होंने खुशी–खुशी फांसी का फंदा चूमा और देश के लिए अपनी जान कुर्बान कर दी। वंदे मातरम भारत का गौरव है। पूरा श्वंदे मातरमश न गाना सिर्फ वंदे मातरम का अपमान नहीं है। यह भारत माता का भी अपमान है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस की लीगी मानसिकता अभी तक बदली नहीं है। 1937 में मुस्लिम लीग के दबाव में कांग्रेस ने यह फैसला लिया था कि पूरा श्वंदे मातरमश गीत नहीं गाया जाएगा। आज भी कांग्रेस भारत की संस्कृति, जीवन मूल्य, परंपराओं और जड़ों से जुड़ी हुई नहीं है। वह वोटबैंक की घटिया राजनीति कर रही है। ?केंद्रीय मंत्री ने सवाल पूछा, क्या कांग्रेस संसद से ऊपर है और क्या संविधान से ऊपर है? शिवराज सिंह ने कहा, भारत माता के इस अपमान को देश बर्दाश्त नहीं करेगा। कांग्रेस को देश कभी माफ नहीं करेगा। वहीं, भाजपा सांसद अनुराग ठाकुर ने गुरुवार को सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म श्एक्सश पर लिखा, ष्कांग्रेस ने आखिरकार मान लिया है कि वह वंदे मातरम का विरोध करती रहेगी। कांग्रेस कार्य समिति (सीडब्ल्यूसी) ने निर्णय लिया है कि कांग्रेस वंदे मातरम का दो छंद ही गाएगी। कांग्रेस अपने को देश और संविधान से ऊपर मानती है। संसद जब कोई कानून पारित करता है तो देशवासियों को मानना पड़ता है संविधान यही कहता। संविधान का अपमान, नहीं सहेगा हिंदुस्तान। बिहार सरकार में मंत्री विजय सिन्हा ने आईएएनएस से बात करते हुए कहा, ष्कांग्रेस मानसिक तौर पर गुलाम है और कांग्रेस में बैठे लोग बंधुआ मजदूर की तरह हैं।

राजीव गांधी की जयंती पर कांग्रेस ने किया नमन, पंचायती राज और तकनीकी क्रांति में योगदान को सराहा

नई दिल्ली, (एजेंसी)। पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की जयंती पर गुरुवार को कांग्रेस के शीर्ष नेताओं ने दिल्ली स्थित वीर भूमि पहुंचकर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। इस मौके पर पार्टी ने राजीव गांधी के विजन और योगदान को याद करते हुए कहा कि उनका कार्यकाल देश के लिए मील का पत्थर साबित हुआ। कांग्रेस संसदीय दल की चेयरपर्सन सोनिया गांधी और पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने वीर भूमि पहुंचकर राजीव गांधी को पुष्प अर्पित किए। उनके साथ कांग्रेस नेता राहुल गांधी भी मौजूद रहे। राहुल गांधी ने भी अपने पिता, पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की जयंती पर उन्हें श्रद्धांजलि दी। पूर्व प्रधानमंत्री की जयंती पर कांग्रेस नेताओं ने राजीव गांधी के दूरदर्शी फैसलों को याद किया। छत्तीसगढ़ के पूर्व मुख्यमंत्री और वरिष्ठ कांग्रेस नेता भूपेश बघेल ने कहा, "राजीव गांधी का राजनीतिक कार्यकाल छोटा था, लेकिन उनका योगदान बहुत बड़ा था। उन्होंने कई क्रांतिकारी कदम उठाए, जिनमें पंचायती राज, आईटी क्रांति और वोटिंग की उम्र घटाकर 18 साल करना शामिल है। अगर राजीव आज हमारे बीच होते तो हम आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस में नंबर वन होते।" वरिष्ठ नेता मणिशंकर अय्यर ने पार्टी कार्यकर्ताओं से अपील की कि वे सिर्फ औपचारिकता न निभाएं। उन्होंने कहा, "आज जो लोग यहां आए हैं, उनसे मेरी गुजारिश है कि वे सिर्फ 'परिक्रमा' करने के बजाय यह पढ़ें कि राजीव जी ने क्या कहा था, इस देश की यात्रा के लिए उनका विजन क्या था ।

फैजाबाद जिला कचहरी से चोरी का आरोपी कैदी पुलिस कस्टडी से हुआ फरार

आरोपी चोर

ब्यूरो चीफ राजेश कुमार श्रीवास्तव

अयोध्या।फैजाबाद जिला कचहरी में गुरुवार को पुलिस को चकमा देकर चोरी के मामले मे आरोपी कैदी लॉकअप से फरार हो गया।कैदी के भागने की सूचना मिलते ही पुलिस महकमे में हड़कंप मच गया।पुलिस ने कचहरी परिसर और आसपास के इलाकों में उसकी काफी तलाश किया लेकिन पुलिस उसे नहीं गिरफ्तार कर सकी।जानकारी के मुताबिक पेशी से पहले उसे लॉकअप में रखा गया था।फरार कैदी की पहचान अयोध्या कोतवाली क्षेत्र के दर्शननगर निवासी दीपक कुमार के रूप में हुई है। वह चोरी के मामले में जिला कारागार में बंद था। गुरुवार को उसे कोर्ट में पेशी के लिए जिला कचहरी लाया गया था।पेशी से पहले दीपक को कचहरी परिसर स्थित लॉकअप में रखा गया था। इसी दौरान वह पुलिसकर्मियों को चकमा देकर लॉकअप से फरार हो गया। घटना की जानकारी मिलते ही पुलिस अधिकारियों ने मौके पर पहुंचकर पूरे मामले की जानकारी ली।कैदी के फरार होने के बाद पुलिस ने कचहरी परिसर के साथ आसपास के इलाकों में भी तलाशी अभियान शुरू कर दिया।संभावित रास्तों और ठिकानों पर पुलिस टीमें लगाई गई हैं। पुलिस उसके संपर्क में रहने वाले लोगों से भी पूछताछ कर रही है।घटना के बाद कचहरी की सुरक्षा व्यवस्था पर भी सवाल उठने लगे हैं।पुलिस यह पता लगाने में जुटी है कि लॉकअप से कैदी किस तरह बाहर निकला और सुरक्षा में कहां चूक हुई।पहले भी 2 कैदी फरार, नहीं पकड़े गए।अयोध्या में कैदियों के फरार होने की यह पहली घटना नहीं है।इससे पहले जिला कारागार से भी दो कैदियों के फरार होने की घटनाएं सामने आ चुकी हैं। दोनों कैदियों को पुलिस अभी तक गिरफ्तार नहीं कर सकी है।ऐसे में अब कचहरी के लॉकअप से चोरी के आरोपी के फरार होने की घटना ने पुलिस और जेल प्रशासन की सुरक्षा व्यवस्था पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं।

डॉ. अलका प्रकाश पांडेय को कुटाई मुलावर्मन साम्राज्य, इंडोनेशिया की ओर से मिला अंतर्राष्ट्रीय सम्मान

नई दिल्ली ब्यूरो चीफ पी अस्थाना

शिक्षा, लेखन, विश्व शांति एवं मानवतावाद के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए डॉ. अलका प्रकाश पांडेय को महाराजा कुटाई मुलावर्मन साम्राज्य, इंडोनेशिया की ओर से अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित किया गया है स डॉ. अलका प्रकाश पांडेय एक लेखिका एवं शिक्षाविद् के रूप में भी सक्रिय हैं। लेखन एवं शिक्षा के माध्यम से उन्होंने ज्ञान, मानवीय मूल्यों, सामाजिक जागरूकता तथा विश्व शांति के संदेश को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उनके लेखन और सामाजिक सरोकारों से जुड़े कार्य समाज में सकारात्मक सोच एवं मानवीय संवेदनाओं को प्रोत्साहित करते हैं। प्रमाणपत्र के अनुसार, डॉ. अलका प्रकाश पांडेय को विश्व शांति, शिक्षा एवं मानवतावाद के क्षेत्रों में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर महामहिम महाराजा कुटाई मुलावर्मन साम्राज्य के साथ साझेदार के रूप में योगदान के लिए यह सम्मान प्रदान किया गया है। यह प्रमाणपत्र 16 अगस्त 2026 को इंडोनेशिया गणराज्य में जारी किया गया है। प्रमाणपत्र पर एच.आई.एम. प्रो. डॉ. एम.एस.पी.ए. जंश्याह रेजा के हस्ताक्षर अंकित हैं, जिन्हें प्रमाणपत्र में कुटाई मुलावर्मन के संप्रभु सम्राट के रूप में उल्लेखित किया गया है। शिक्षा, लेखन, मानवतावाद एवं सामाजिक सरोकारों के क्षेत्र में डॉ. अलका प्रकाश पांडेय के निरंतर प्रयासों को देखते हुए यह अंतर्राष्ट्रीय सम्मान उनके लिए एक महत्वपूर्ण उपलब्धि माना जा रहा है।

संपादकीय

यथार्थ से टकराती कथाएं

हकीकत से कटे नैरेटिव्स का अपना जीवनकाल होता है। जब उनका सामना विपरीत होते जमीनी हालात से होता है, तो उनमें दरारें पड़ने लगती हैं। जेन–जी का तेवर उन्हीं हालात का नतीजा है। भारत का राजनीतिक विमर्श काफी पहले शालीनता की हदें तोड़ चुका है, इसलिए इसमें नए अपशब्दों के जुड़ने पर शायद ही किसी को एतराज होता है। तीखे ध्रुवीकरण की मौजूदा सूरत में किसी नेता की टिप्पणियों को गरिमा–विहीन या मर्यादा के खिलाफ बता कर उसे घेरने की रणनीति का विरोधी खेमों पर अब कोई असर नहीं होता। कई वर्षों तक इस नई स्थिति का लाभ भाजपा ने उठाया।

भाजपा नेताओं को लेकर कुछ हलकों से तब भी ऐसे शब्द बोले जाते थे, लेकिन तब कथानक पर भाजपा इकॉ–सिस्टम का इतना दबदबा था, वे शब्द बोलने वाले को ही भारी पड़ जाते थे। लेकिन यह बदले माहौल का ही संकेत है कि ऐसे लफ्ज अब जनमत के एक बड़े हिस्से में नया राजनीतिक कथानक गढ़ने का काम करने लगे हैं। भाजपा काफी समय तक विपक्षी नेताओं को प्रहसन–पात्र के रूप में पेश सियासी फायदे उठाती रही, मगर अब सोशल मीडिया– खासकर रील्स के इस्तेमाल से वैसी ही छवि उनके शीर्ष नेताओं को पेश की जा रही है, जिसे एक बड़ा श्रोता वर्ग मिल रहा है। बेशक, यह स्थिति लाने में जेन–जी के आंदोलनों ने बड़ी भूमिका निभाई है। भाजपा के सामने सवाल खड़ा है कि कहानी ऐसे क्यों पलटने लगी है? वे आत्म–मंथन करें, तो शायद उन्हें आभास होगा कि यथार्थ से कटे कथानकों का अपना जीवनकाल होता है। जब उनका सामना विपरीत होते जमीनी हालात से होता है, तो उनमें दरारें पड़ने लगती हैं। जेन–जी का तेवर उन्हीं हालात का नतीजा है। हिंदुत्व की पहचान के साथ श्विश्व गुरुच्च की हैसियत दिलाने के वादों से वह छली गई महसूस कर रही है, तो उसकी वजहें हैं। ये पीढ़ी श्मेक इन इंडियाच्च, श्नया भारतच्च, श्देश बदल रहा हैच्च, श्अमृत कालच्च, श्विकसित भारतच्च जैसे नारों को सुनते हुए जब बड़ी हुई, तो उसने पाया कि असल में उसके पास आगे बढ़ने के पहले जितने अवसर भी उपलब्ध नहीं हैं। तो वह हिसाब मांग रही है। इसका जवाब श्सप्तधाराच्च जैसे नए नैटेरिव गढ़ कर नहीं दिया जा सकता। ना ही श्दिमागी नक्सलियोंच्च को अलग–थलग करने जैसे एलान नई परिस्थितियों में अपेक्षित भय पैदा कर सकेंगे।

दिमागी नक्सली यानी सियासी तापमान बढ़ाने वाले शब्द

उमेश

लालकिले की प्राचीर से होने वाले प्रधानमंत्री के सालाना संबोधन पर चर्चाएं और बहसें होना कोई नई बात नहीं है। लेकिन इस बार प्रधानमंत्री द्वारा प्रयुक्त दो शब्दों 'दिमागी नक्सल' ने चर्चाओं की तासीर बढ़ा दी है। ऐसा नहीं कि इन शब्दों के संजीदापन को प्रधानमंत्री नहीं जानते होंगे। प्रधानमंत्री द्वारा इन शब्दों के प्रयोग के पीछे दो वजहे साफ नजर आती हैं। दरअसल इस बहाने प्रधानमंत्री देश के उस वर्ग की तरफ दिलाना चाहते हैं, जिसकी नजर में उनकी और उनकी सरकार का हर कदम गलत और दकियानूसी है। दूसरी वजह, अपने समर्थकों और पार्टी कार्यकर्ताओं को नए उत्साह से भरना है, जो हालिया कुछ घटनाओं से किंचित निराश हैं। लालकिले की प्राचीर से देश के संबोधन में प्रधानमंत्री मोदी ने जो कहा, उस पर एक बार फिर ध्यान दिया जाना चाहिए। उन्होंने कहा, श्21वीं सदी में यह बहुत जरूरी है कि हम दशकों पुरानी उन चुनौतियों को खत्म करें, जिन्होंने देश को पीछे रखा है। नक्सलवाद और माओवाद ने लाखों युवाओं का भविष्य बर्बाद कर दिया है। उन्होंने अनगिनत माताओं के युवा बेटों को छीन लिया और देश भर के परिवारों के सपनों को चकनाचूर कर दिया। लगभग चार दशकों तक, नक्सलवाद ने भारत के बड़े हिस्सों और उसकी आबादी के एक बड़े हिस्से को अपनी गिरफ्त में रखा, बंदूक के दम पर शासन किया और संविधान की धज्जियां उड़ाईं। आज हथियारों वाले नक्सल से बड़ी चुनौती दिमागी नक्सली ज्यादा खतरनाक हैं, इससे देश को बचाना होगा। कभी देश के एक तिहाई हिस्से को लाल गलियारे के रूप में जाना जाता था। कभी माओवादियों और नक्सलियों की समानांतर सत्ता नेपाल से लेकर आंध्र प्रदेश तक समानांतर सत्ता चलती थी। उनके प्रभाव वाले क्षेत्रों कों ' पशुपति से तिरूपति तक ' के नाम से जाना जाता था। देश का गृहमंत्रालय की कमान संभालने के बाद अमित शाह ने 31 मार्च तक देश को लाल गलियारे से मुक्त कराने का वादा किया था। अमित शाह की दोहरी रणनीति के चलते यह गलियारा अब नक्सली हिंसा और आतंक से मुक्त हो चुका है। इसे संयोग कहें या कुछ और, जिस वक्त लाल किले से प्रधानमंत्री देश को संबोधित कर रहे थे, उसी वक्त लाल गलियारे वाले उड़ीसा के मलकानगिरी और छत्तीसगढ़ के बस्तर के कई गांवों में पहली बार तिरंगा लहरा रहा था। उन तिरंगों को सलामी देने वालों में वे लोग भी भारतीय संविधान के तहत हासिल पुलिस या होमगार्ड की वर्दी में शामिल थे, जो हाल के दिनों तो इन इलाकों में भारतीय संविधान को नहीं मानते थे, जिनका मानना था कि सत्ता बारूद से निकलती है। अब भी उनके हाथों में बंदूकें हैं, जिनके ट्रिगर पर अब भी उनकी ही उंगलियां हैं,लेकिन अब वे भारतीय संविधान की मर्यादा से बंध चुकी हैं। प्रधानमंत्री ने अपने संबोधन में इस बदलाव को रेखांकित किया है, लेकिन उन्हें आशंका है कि समाज के विशेषकर बौद्धिक वर्ग में जो नक्सलवादी मानस के लोग हैं, उनसे निबटना आसान नहीं है। वैसे दिमागी नक्सली कोई नए शब्द नहीं है। करीब दशक भर पहले फिल्मकार विवेक अग्निहोत्री ने इसी तरह अर्बन नक्सली शब्द का इस्तेमाल किया था। तब से वामपंथी हिंसा का विरोधी मानस इन शब्दों का खुलकर प्रयोग करता रहा है। वह मानता रहा है कि देश में जब भी अराजक परिस्थितियां बनती हैं, उसके पीछे अर्बन नक्सलियों की ही सोच काम करती है। कह सकते हैं कि दिमागी नक्सली शब्द ने उन्हीं शब्दों को नई पहचान दे दी है। देश का अधिसंख्य बौद्धिक समाज शायद ही इससे इत्तेफाक रखता हो, लेकिन अतीत में यह वर्ग 'दबाव समूह' के रूप में काम करता रहा है। छह अप्रैल 2020 को दंतेवाड़ा में घात लगाकर नक्सलियों ने केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के 75 और छत्तीसगढ़ पुलिस के एक सवाल को बारूदी सुरंगों से उड़ा दिया था। इस घटना के बाद देश का बड़ा वर्ग सदमे में था। तत्कालीन मनमोहन सरकार ने नक्सलियों को सबक सिखाने के लिए सैनिक कार्रवाई करने की ठान ली थी। उस दौरान भी दिमागी नक्सलियों को विश्वविद्यालयों और दूसरे संस्थानों में चिन्हित करने की प्रक्रिया चली थी। लेकिन शहरों में वामपंथी उग्रवाद के समर्थक लोगों के प्रबल विरोध के चलते मनमोहन सरकार सैनिक कार्रवाई से पीछे हट गयी थी। हालाकि इस घटना के तीन साल एक महीने बाद 25 मई 2013 को छत्तीसगढ़ की झीरम घाटी में घात लगाकर नक्सलियों ने छत्तीसगढ़ कांग्रेस के तकरीबन समूचे नेतृत्व को उड़ा दिया था। भुक्तभोगी होने के बावजूद कांग्रेस की अगुआई वाली केंद्रीय सरकार ने नक्सलियों को नेस्तनाबूद करने के लिए न तो ठोस रणनीति बना सकी और न ही रोक लगाने में कामयाब हुई। वह सिर्फ श्रोकथामश की रणनीति पर चलती रही, लेकिन अमित शाह ने इसे बदलकर श्पूरी तरह खत्म करनेश की रणनीति को अपनाया। इसके तहत, श्वामपंथी उग्रवाद' के प्रति श्जीरो टॉलरेंसश नीति बनाई गई। देश को नक्सल मुक्त करने के राष्ट्रीय लक्ष्य के तहत संवाद, सुरक्षा और समन्वय पर जोर दिया। खुफिया जानकारी पर आधारित ऑपरेशन किए जाने लगे। केंद्रीय और राज्य बलों के बीच बेहतर तालमेल बनाया गया और जरूरत के हिसाब से वित्तीय मदद के लिए खजाना खोला गया। इसके साथ ही मुख्यधारा में लौटने वाले नक्सलियों के पुनर्वास की व्यवस्था को भी जारी रखा गया। खुफिया जानकारी ही थी, कि बसवराजू, पतिराम मांझी, गणेश उइके और मिलिंद तेलतुंबडे जैसे कई बड़े माओवादी नेताओं को सुरक्षा बलों ने घेर कर ढेर कर दिया। सुरक्षा बलों के लगातार दबाव के चलते छत्तीसगढ़, तेलंगाना और महाराष्ट्र में बड़े पैमाने पर आत्मसमर्पण हुए। इसका असर जल्द दिखने लगा। नक्सली हिंसा में 56 फीसद और जवानों की मौतों में 75 फीसद की कमी आई। आम नागरिकों के शिकार बनने की घटनाओं में भी 70 प्रतिशत की कमी आई। इसके चलते नक्सल–प्रभावित जिलों की संख्या 2014 के 126 की तुलना में 2026 में घटकर सिर्फ एक जिले तक सीमित हो गई है। सुरक्षा और विकास की साझी रणनीति के तहत सुरक्षा अभियानों के साथ–साथ पुलिसिंग, कनेक्टिविटी, वित्तीय समावेश और आजीविका में लगातार निवेश किया, गया। इसके तहत 2014 के बाद नक्सली इलाकों में 594 थाने, 408 नए सुरक्षा कैंप और 12,211 किलोमीटर लंबी सड़कें बनाई गईं। इससे वामपंथी उग्रवाद प्रभावित इलाकों में राज्य की मौजूदगी बढ़ी। वामपंथी उग्रवाद प्रभावित इलाकों में संचार कनेक्टिविटी, बैंकिंग ढांचा, डाकघर,आईटीआई, कौशल विकास केंद्र और पुनर्वास नीतियों का जमकर विस्तार किया गया। इससे आर्थिक अवसर पैदा हुए और पूर्व माओवादी कैडरों को मुख्यधारा में लौटने के लिए प्रोत्साहन मिला। लालकिले की प्राचीर से अपने संबोधन में प्रधानमंत्री ने इसे अपनी सरकार की उपलब्धि के रूप में गिनाया भी। हाल ही में सफल माने जा रहे काकरोच जनता पार्टी के आंदोलन में पीछे से वामपंथी उग्रवाद समर्थक ताकतों के हाथ की चर्चाएं रहीं।

नागरिकों पर ही है शहर साफ रखने की जिम्मेदारी

विनीत नारायण

सिर्फ सरकार को कोसना काफी नहीं। हमें खुद को भी आईना दिखाना होगा। अवैध निर्माण, मानकों से ज्यादा मंजिलें, नालियों में कचरा फेंकना, ये सब हम खुद करते हैं। ग्रामीण जीवन में जो सामूहिक जिम्मेदारी की भावना थी, शहर आकर हम भूल गए। कहने को शहरी हैं, लेकिन व्यवहार जंगली जैसा। बरसात शुरू होते ही शहरों की गलियों–मोहल्लों में पानी जमा होना शुरू हो जाता है। मौसम विभाग अगर सही अनुमान लगाता है तो मूसलाधार बारिश के अनुमान के बावजूद देश के हर शहर में बरसात के गंदे पानी के तालाबों के बीच नारकीय जिंदगी जीने को मजबूर क्यों हो जाते हैं? हर साल यही कहानी दोहराई जाती है। लेकिन इसकी जिम्मेदारी क्या केवल सरकार की है? क्या नागरिकों की कोई जिम्मेदारी नहीं? क्या कारण हैं कि हर साल मानसून में देश के कई शहर नदी नालों में तब्दील हो जाते हैं? सरकार की बात करें तो इसके तीन बड़े कारण हैं। पहला, बिना योजना के बसी कॉलोनियाँ और प्रशासन की आँख मूँदकर दी गई अनुमति। सड़क, नाली, सीवरज् कुछ भी सही न हो तो भी कॉलोनी पास। दूसरा, नालियों और सीवर में ठोस कचरा जमा होना, क्योंकि स्थानीय निकाय अपनी जिम्मेदारी ठीक से नहीं निभाते। तीसरा और सबसे खतरनाक, हर दो–तीन साल में सड़कों की ऊँचाई बढ़ा देना। जिससे आसपास के मकानों का तल हमेशा नीचे होता जाता है और पानी भराव की मुख्य वजह बन जाता है। पहले दो कारणों पर तो हर साल मीडिया में शोर मचता रहता है। लेकिन सड़क का बार–बार ऊँचा होना कोई नहीं पूछता। क्यों? क्योंकि जितनी मोटी सड़क बिछाई जाएगी, ठेकेदार और इंजीनियरों का मुनाफा उतना ही बढ़ेगा। पहली बार अच्छी गुणवत्ता की सड़क बना दी जाए तो बार–बार बनाने की जरूरत ही न पड़े। थोड़े–बहुत पैचवर्क से काम चल सकता है, वहाँ भी पूरी नई सड़क डाल दी जाती है। बिना इस बात का लिहाज किए कि सड़क के दोनों तरफ रहने वाले आम लोगों की इतनी हैसियत नहीं होती कि वे हर दो साल में अपने घर का फर्श ऊँचा करा लें। यदि विदेशों से तुलना की जाए तो एक बार भी ऐसा नहीं देखा कि विदेशों की किसी कॉलोनी की सड़क अचानक ऊँची हो गई हो या किसी मकान का फर्श सड़क से नीचे हो गया हो। सौ साल पुराने मकानों में भी यह समस्या नहीं है। न सड़क का स्तर बढ़ा, न घर का फर्श नीचा हुआ। तो हमारे इंजीनियरों की अक्ल पर क्या पत्थर पड़ गए हैं? या समझते तो हैं, लेकिन रिश्वत की हवस में करोड़ों लोगों की जिंदगी में हर दो–चार साल मुसीबत खड़ी कर देते हैं। लेकिन सिर्फ सरकार को कोसना काफी नहीं। हमें खुद को भी आईना दिखाना होगा। अवैध निर्माण, मानकों से ज्यादा मंजिलें, नालियों में कचरा फेंकना, ये सब हम खुद करते हैं। ग्रामीण जीवन में जो सामूहिक जिम्मेदारी की भावना थी, शहर आकर हम भूल गए। कहने को शहरी हैं, लेकिन व्यवहार जंगली जैसा। आजकल सोशल मीडिया पर कुछ रील्स वायरल हो रही हैं। उनमें आम नागरिक दिखते हैं जो हाथ में फावड़ा–झाड़ू लेकर सड़क पर खड़े हैं। ये लोग जल भराव वाली सड़कों पर नालियों से प्लास्टिक, पॉलीथीन, गंदगी निकालते हुए देखें जाते हैं। कोई सरकारी विभाग का इंतजार नहीं कर रहा। खुद अपना इलाका साफ कर रहे हैं ताकि बारिश का पानी रुक न जाए। ये छोटी–छोटी कोशिशें ही असल बदलाव ला सकती हैं। जरूरत है तो संगठित होने की। हम संबंधित अधिकारियों से सवाल पूछें। उनसे पूछें कि सड़क का स्तर हर दो साल में क्यों बढ़ाया जाता है। और अगर वे जवाब न दे पाएँ तो दबाव बनाएँ कि सड़क को उसके मूल स्तर पर लाया जाए। आज जरूरत है कि हम उन वायरल रील्स वाले नागरिकों से सीखें। जरूरत पड़ने पर खुद निकलकर नालियाँ साफ करें, कचरा न फेंकें, और साथ मिलकर प्रशासन पर दबाव बनाएँ। समस्या तभी घटेगी, जब हम अपनी उदासीनता छोड़कर खुद आगे बढ़ेंगे। सोचिए, अगर हर मोहल्ले में सिर्फ दस–बारह लोग नियमित रूप से नालियों की सफाई करें या सरकारी विभाग पर साफ–सफाई का दबाव बनाएं तो क्या होगा? पानी का बहाव खुला रहेगा, मच्छर कम पैदा होंगे, बीमारियाँ घटेंगी और सबसे बड़ा फायदा, घरों में पानी घुसने का खतरा काफी हद तक कम हो जाएगा। वायरल रील्स में जो लोग दिख रहे हैं, वे कोई सुपरहीरो नहीं हैं। वे सामान्य नौकरीपेशा, दुकानदार, छात्र हैं। उन्होंने सिर्फ यह तय किया कि इंतजार करने से बेहतर है खुद काम करना। यही रवैया हमें अपनाना होगा। एक और महत्वपूर्ण बात। सड़क की ऊँचाई बढ़ाने की समस्या सिर्फ पानी भराव तक सीमित नहीं है। जब सड़क ऊँची हो जाती है तो घर के दरवाजे–खिड़कियाँ सड़क के स्तर से नीचे आ जाते हैं। इससे घर में नमी बढ़ती है, दीवारें गीली रहती हैं, बिजली के तार खतरे में पड़ जाते हैं और बच्चों–बुजुर्गों के लिए घर से निकलना भी मुश्किल हो जाता है।

आर्कटिक में सबसे पहले पहुंचना मायने रखता है

असद

पश्चिमी शिपिंग कंपनियों और यूरोप के लिए, आइस सिल्क रोड केवल एक भू–राजनीतिक समस्या नहीं बल्कि एक प्रतिस्पर्धी समस्या भी है। अगर चीनी झंडे वाले जहाज निंगबो से फेलिक्सटो तक की यात्रा स्वेज के रास्ते 40 दिनों के मुकाबले लगभग 18–20 दिनों में पूरी कर सकते हैं, तो यूरोपीय आयातकों को एक तेज, सस्ता विकल्प मिलता है। पिघलती बर्फ और सुलगते मध्य पूर्व ने चीन को एक नया व्यापारिक मार्ग और एक शुरुआती बढ़त दे दी है। जैसे–जैसे बीजिंग नॉर्दर्न सी रूट को एक कार्यशील शिपिंग कारोबार में बदल रहा है, वह चुपचाप इस नक्श्ो को फिर से खींच रहा है कि वैश्विक व्यापार पर किसका नियंत्रण है और भारत सहित अन्य देश इससे तालमेल बिठाने के लिए जूझ रहे हैं।इतिहास में हर बड़े व्यापारिक मार्ग ने उसी को पुरस्कृत किया है जिसने उसे सबसे पहले मानचित्रित, सुरक्षित और सामान्य किया, मसालों के मार्गों पर वेनिस, स्वेज पर ब्रिटेन, और युद्धोत्तर प्रशांत महासागर पर अमेरिका। अब चीन आर्कटिक में वही भूमिका चाहता है, और इसे हासिल करने के लिए उसने असाधारण तेजी दिखाई है। इसका ट्रिगर मध्य पूर्व रहा है। हूती हमलों से बाब–अल–मंडेब जलडमरूमध्य में बाधा और ईरान युद्ध से होर्मुज जलडमरूमध्य पर दबाव के चलते, 23 जुलाई 2026 को टैंकरों पर हमलों के बाद तेल की कधिमतें 100 डॉलर प्रति बैरल से ऊपर चली गईं, और शिपिंग कंपनियां रेड सी कॉरिडोर को लेकर पहले से कहीं अधिक सतर्क हो गईं। चीन का जवाब था उस मार्ग को तेजी से आगे बढ़ाना जिसे वह वर्षों से चुपचाप तैयार कर रहा थारू रूस के नॉर्दर्न सी रूट (एनएसआर) के माध्यम से श्आइस सिल्क रोडश, जो एशिया और यूरोप के बीच गर्मियों के पारगमन समय को लगभग आधा कर सकता है।नतीजे अब प्रयोगात्मक नहीं रह गए हैं। सितंबर 2025 में, कंटेनर जहाज श्इस्तांबुल ब्रिजश ने चीन–यूरोप के बीच पहली सीधी आर्कटिक यात्रा पूरी की, जो निंगबो–झोऊशान से फेलिक्सटो, हैम्बर्ग और गदान्स्क होते हुए नीदरलैंड्स पहुंचा, इस यात्रा को चीन के परिवहन मंत्रालय ने दुनिया का पहला आर्कटिक कंटेनर मार्ग बताया, जो विशेष रूप से श्सीमा–पार ई–कॉमर्स और उच्च मूल्य–वर्धित वस्तुओं के लिए डिजाइन किया गयाश था। अगस्त 2026 तक, चीनी शिपिंग कंपनी सी लीजेंड ने उस पहली यात्रा को एक नियमित साप्ताहिक सेवा में बदल दिया था, और चाइना शिप ओनर्स एसोसिएशन ने जुलाई–सितंबर की एक औपचारिक आर्कटिक शिपिंग विंडो और 20,000 टीईयू की संयुक्त कंटेनर व बहुउद्देशीय बेड़े क्षमता की पुष्टि की। जो काम एक अकेले जहाज द्वारा अनजाने पानी को टटोलने से शुरू हुआ था, वह एक साल के भीतर व्यापारिक ढांचे का एक नियमित हिस्सा बन गया है।चीन की जल्दबाजी सोची–समझी है, और यह उन तीन गणनाओं पर टिकी है जिन्हें चीनी सरकारी मीडिया ने स्पष्ट रूप से बताया है। पहला है अतिरिक्त सुरक्षारू बीजिंग नहीं चाहता कि यूरोप के साथ उसका व्यापार किसी एक ही कॉरिडोर का बंधक बने। दूसरा है रूस के साथ रिश्ता। चूंकि एनएसआर लगभग पूरी तरह रूस–नियंत्रित जलक्षेत्र से होकर गुजरता है। चीन की शिपिंग कंपनियां रूस के मौन सहयोग से इस मार्ग पर काम करती हैं, जिससे चीनी शिपिंग को एक ऐसी संरचनात्मक बढ़त मिलती है जिसकी बराबरी फिलहाल एमएससी, मार्स्क और अन्य बड़ी पश्चिमी कंपनियां नहीं कर पातीं। तीसरा, और सबसे महत्वपूर्ण, है मानक तय करना। शिपिंग मार्ग केवल भौगोलिक नहीं होते, वे बीमा ढांचों, बंदरगाह प्रोटोकॉल, आइसब्रेकर–एस्कॉर्ट व्यवस्थाओं और शेड्यूलिंग मानदंडों से बनते हैं, जो एक बार स्थापित हो जाने के बाद नए प्रवेशकर्ताओं के लिए दोहराना महंगा साबित होता है। बीजिंग की आर्कटिक मुहिम को उस व्यापक पैटर्न से अलग करके नहीं देखा जा सकता जो ईरान युद्ध के बढ़ने के बाद से दिखाई दे रहा हैरू चीनी व्यापार और ऊर्जा को ढोने वाली हर धमनी को व्यवस्थित रूप से सुरक्षित करना। चीन ने एक साथ मध्य एशिया के श्मिडिल कॉरिडोरश के जरिए जमीनी मार्गों को गहरा किया है, कजाखस्तान के साथ सड़क मार्गों का विस्तार किया है जो अब उसके मध्य एशियाई व्यापार का आधे से अधिक हिस्सा सड़क मार्ग से ढोते हैं, और आर्कटिक विकल्प को आगे बढ़ाया है, एक ही अंतर्निहित आशंका के विरुद्ध तीन अलग–अलग बीमा पॉलिसियां, कि पश्चिम–प्रभुत्व वाले समुद्री अड़चन बिंदुओं का इस्तेमाल कभी चीनी व्यापार के खिलाफ किया जा सकता है। चीनी सरकारी मीडिया आर्कटिक को संप्रभुता और सुरक्षा के आधार पर भी दृढ़ता से पेश करता है, इस क्षेत्र में चीन खतरा के पश्चिमी दावों को खारिज करते हुए और इस बात पर

जोर देते हुए कि बीजिंग की गतिविधियां, एक स्वघोषित श्निकट–आर्कटिक राज्यश के रूप में, समुद्री कघनून पर संयुक्त राष्ट्र कन्वेंशन के तहत वैध और किसी सैन्य इरादे से मुक्त हैं। पश्चिमी शिपिंग कंपनियों और यूरोप के लिए, आइस सिल्क रोड केवल एक भू–राजनीतिक समस्या नहीं बल्कि एक प्रतिस्पर्धी समस्या भी है। अगर चीनी झंडे वाले जहाज निंगबो से फेलिक्सटो तक की यात्रा स्वेज के रास्ते 40 दिनों के मुकघबले लगभग 18–20 दिनों में पूरी कर सकते हैं, तो यूरोपीय आयातकों को एक तेज, सस्ता विकल्प मिलता है, लेकिन ऐसा विकल्प जो चीन–रूस शिपिंग अवसंरचना, बीमा और बंदरगाह संचालन पर तेजी से निर्भर होता जा रहा है, जिससे उस निर्भरता में और गहराई आती है जिसे ब्रसेल्स वर्षों से कम करने की कोशिश कर रहा है। खाड़ी देशों और मिस्र के लिए, एक टिकाऊ आर्कटिक विकल्प उस दीर्घकालिक रणनीतिक लाभ को कमजोर करता है जो स्वेज और होर्मुज ने पैदा किया है, भले ही, जैसा कि कुछ विश्लेषक आगाह करते हैं, आर्कटिक कंटेनर यातायात आने वाले वर्षों तक एक पूर्ण विकल्प के बजाय एक मौसमी अतिरिक्त साधन ही बना रहेगा, शिपिंग विंडो अभी भी केवल जुलाई के अंत से सितंबर के अंत तक ही चलती है। भारत के लिए, दांव अधिक जटिल हैं।

मोदी को पता भी कि लालकिले से क्या बोला

श्रुति व्यास

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का ताजा जुमला इतिहास में उनकी याद का शायद एक और शब्द हो। 80वें स्वतंत्रता दिवस पर लाल किले की प्राचीर से नरेंद्र मोदी ने भारतीय राजनीति, भारतीय मानस की शब्दावली में एक विचित्र नया लेबल जोड़ाकृदिमागी नक्सल। मानती हूं, मेरे जैसे लोगों के लिए इस शब्द में एक खास तरह की गूंज है। भारत सके लोगों ने भी इसे पकड़ने में देर नहीं लगाई। चौबीस घंटों के भीतर ही सोशल मीडिया पर गर्व से खुद को श्दिमागी नक्सलच्च कहने वाले लोग आ गए, रेडिट पर इसके लिए अलग फ्लेयर की मांग होने लगी, दिमागी जनता पार्टी बनाने के मजाक चलने लगे, जबकि पी. चिदंबरम ने सीधे घोषणा कर दी कि उन्हें दिमागी नक्सल कहलाने पर गर्व है। दरअसल राजनीतिक गालियों की एक दिलचस्प आदत होती हैकृवे अपने रचयिता के हाथ से तुंरत निकल जाती हैं। फिर दिमागी होना कोई सबसे बुरा आरोप भी नहीं है। आखिर सर्वप्रथम दिमाग तो है! लेकिन मजाक को थोड़ी देर के लिए किनारे रखिए और पहले उस मंच को देखिए जहां से यह कहा गया। स्वतंत्रता दिवस साल का वह एक दिन है जब प्रधानमंत्री केवल किसी पार्टी या सरकार के मुखिया की तरह नहीं, बल्कि गणराज्य की आवाज की तरह बोलता है। लाल किला वह जगह है जहां भारत खुद को देखता हैकृअपनी यात्रा, अपनी महत्वाकांक्षाओं, अपनी उम्मीदों कोकृऔर अपने लोगों से, और दुनिया से, यह कहता है कि वह अपने बारे में क्या मानता है। यही वह मंच है जहां से प्रधानमंत्रियों ने ऐसे शब्द छोड़े हैं जो अपने भाषणों से बड़े हो गए। नेहरू ने एक युवा भारत को वैज्ञानिक दृष्टिकोण और आधुनिक राष्ट्र–निर्माण की भाषा दी। लाल बहादुर शास्त्री ने दियाकृजय जवान, जय किसानकृसैनिक और किसान, दोनों गणराज्य के केंद्र में। अटल बिहारी वाजपेयी ने उसमें जय विज्ञान जोड़ाकृविज्ञान भी वहीं होना चाहिए। मनमोहन सिंह ने इसी प्राचीर से भारत के श्ज्ञान अर्थव्यवस्थाश में प्रवेश की बात की। कहा कि दुनिया में भारत की जगह श्नए शोध और नई सोचश पर निर्भर करेगी। इनमें कोई भी परिपूर्ण प्रधानमंत्री नहीं था, न उनके समय का भारत कोई परिपूर्ण भारत था। यह तर्क भी नहीं है। भारत ने हर रंग की सरकार में सेंसरशिप, असहिष्णुता और असहमति के दमन को देखा है। तर्क इससे कहीं संकरा और सटीक हैकृशब्दावली का। असल बात, उस खास मंच पर खड़े होकर कोई नेता राष्ट्रीय कल्पना में क्या रखता है? क्या बताता है? जवान, किसान, विज्ञान, ज्ञान, नई सोचकृइनमें से हर शब्द ने किसी न किसी तरह राष्ट्रीय कल्पना का दायरा बढ़ाया। किसी नई भूमिका को सम्मान दिया, किसी नई क्षमता को विकसित करने का आग्रह किया, भारत क्या बन सकता है इसका एक और रूप सामने रखा। लालकिले की इस परंपरा में पहली बार दिलचस्प पात्र वह भारतीय नहीं है जिसे बनने के लिए हमें कहा जा रहा है, बल्कि वह भारतीय है जिसे पहचानने के लिए कहा जा रहा है। कोई ऐसा नहीं जिसे राष्ट्रीय कल्पना के भीतर लाया जाए, बल्कि कोई ऐसा जिसे उससे अलग किया जाए। और यह भारत के उसी मंच से कहा गया है जिसका अर्थ कम–से–कम उस सुबह सबके लिए बोलना होता है। दूसरा, इस वाक्यांश को किसी पक्षधर की तरह नहीं, एक देशभक्त की तरह देखिए, तो इसमें कुछ गहरे स्तर पर अदेशभक्तिपूर्ण लगेगा। मैं यह शब्द पूरी गंभीरता से इस्तेमाल कर रही हूं। पिछले बारह वर्षों में श्राष्ट्रविरोधीश जुमला भारतीय राजनीति के सबसे आसानी से इस्तेमाल किए जाने वाले आरोपों में रहा है। प्रदर्शनकारियों पर, छात्रों पर, पत्रकारों पर, शिक्षाविदों पर, कार्यकर्ताओं पर, राजनीतिक विरोधियों पर। लेकिन राष्ट्रीय भावना के अधिक खिलाफ और क्या हो सकता है कि स्वतंत्रता दिवस के दिन प्रधानमंत्री यह संकेत दे कि देश अपने सोचने वाले लोगों से ही सावधान रहे? भारत को इससे अधिक छोटा क्या कर सकता है कि भारतीय दिमागकृजिसे हम दुनिया के सामने अपनी ताकत के रूप में पेश करते हैंकृउसे राजनीतिक संदेह की श्रेणी में बदल दिया जाए? भारत एक ऐसा देश है जिसे आज भी ज्ञान–शक्ति के रूप में जाना और सम्मान दिया जाता है। सिलिकॉन वैली में भारतीय मूल के सीईओ हमें राष्ट्रीय उपलब्धि लगते हैं। कोई भारतीय वैज्ञानिक विदेश में सफलता हासिल करे तो हम गर्व करते हैं। कोई भारतीय गणितज्ञ सम्मानित हो, हमारे इंजीनियर दुनिया की सबसे बड़ी कंपनियों के लिए निर्माण करेंकृ हमें गर्व होता है। हम शून्य और आर्यभट्ट को याद करते हैं, नालंदा और तक्षशिला को भी। हमें आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस चाहिए, सेमीकंडक्टर फैक्ट्रियां चाहिए, रिसर्च यूनिवर्सिटियां, पेटेंट, नोबेल पुरस्कार, स्टार्टअप चाहिए। खुद प्रधानमंत्री मोदी बार–बार भारत के युवाओं से कहते हैंकृइनोवेट करो, डिसरप्ट करो, सपने देखो, बड़ा सोचो। और फिर आता हैकृदिमागी नक्सल। विरोधाभास मजेदार होता, यदि वह इतना कुछ उजागर न करता। भारतीय दिमाग आविष्कार करे तो उसका उत्सव मनाइए। वही दिमाग सवाल पूछे तो बात जटिल हो जाती है। इसीलिए मैं बार–बार नक्सल से ज्यादा दिमाग पर लौटती हूं। राजनीतिक भाषा अंततरू इतिहास का प्रमाण बन जाती है। वह आने वाली पीढ़ियों को केवल यह नहीं बताती कि किसी सरकार ने क्या किया, बल्कि यह भी कि उसने किस चीज की प्रशंसा की, उसने क्या कल्पना की और कई बार वह किससे डरती थी। और इसीलिए इस शब्द की परिभाषा का न होना महत्वपूर्ण है। आखिर दिमागी नक्सल है कौन? मोदी ने नहीं बताया। उन्होंने कहा कि कुछ लोग नक्सली विचारधारा अपने दिमाग में रखते हैं, देश और युवाओं को गुमराह करने के मौके तलाशते हैं और उन्हें श्पहचानकर अलग–थलगश किया जाना चाहिए। लेकिन यह श्रेणी शुरू कहां होती है और खत्म कहां, यह नहीं बताया गया। जब भाषा साधारण राजनीतिक गाली की नहीं बल्कि राष्ट्रीय सुरक्षा की हो, तो यह कोई छोटा सवाल नहीं है। और यह अस्पष्टता संयोग भी नहीं है। यही इस शब्द की राजनीतिक उपयोगिता है। प्रधानमंत्री मोदी ने पहले भी ऐसे कई शब्द दिए हैं। लेकिन यहां फर्क है। अर्बन नक्सल में कम–से–कम भूगोल था। आंदोलनजीवी के लिए कम–से–कम कोई आंदोलन होना जरूरी था। टुकड़े–टुकड़े गैंग में, कल्पनाशील ढंग से ही सही, किसी गैंग के होने का संकेत था। दिमागी नक्सल में किसी सदस्यता कार्ड की जरूरत नहीं। यहां भूगोल दिमाग के भीतर है। कुछ ही घंटों में दिख भी गया कि यह इलाका कितना फैल सकता है। एक छोर पर भाजपा के एक प्रवक्ता ने कहा कि राहुल गांधी और मल्लिकार्जुन खड़गे ने श्दिमागी नक्सल इकोसिस्टम की मानसिकताश दिखाई हैकृसबूत यह कि वे समारोह में मौजूद नहीं थे। दूसरे छोर पर एक भाजपा मंत्री की कहीं अधिक गंभीर व्याख्या टिप्पणी में घूमती रहीकृ दिमागी नक्सल यानी माओवादी समर्थक, संविधान को भीतर से कमजोर करने वाला, अलगाववादी, ऐसा व्यक्ति जो अनुच्छेद 370 की वापसी चाहता हो या यहां तक कि उत्तर–पूर्व को भारत से उसके संकरे श्चिकन नेकच्च गलियारे के रास्ते काट देना चाहता हो। दूसरे शब्दों मेंकृदेशद्रोह, मानसिकता के कपड़ों में। लेकिन दोनों अर्थ एक साथ सही नहीं हो सकते। यदि किसी समारोह में अनुपस्थित रहना किसी व्यक्ति को उसी श्रेणी में डाल देता है जिसमें देश को दो हिस्सों में काटने की साजिश करने वाला व्यक्ति आता है।

क्लाउड क्या है भारत के लिए स्वायत्त क्लाउड क्यों महत्वपूर्ण है

हर डिजिटल गतिविधि से डेटा तैयार होता है। चाहे स्मार्टफोन से खींची गई तस्वीर हो, डिजिटल भुगतान हो या अस्पताल का अपॉइंटमेंट। इस डेटा को स्टोर, प्रोसेस और जरूरत पड़ने पर एक्सेस करना होता है। क्लाउड एक डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर है, जो संस्थानों को सुरक्षित डेटा सेंटर्स में रखे शक्तिशाली सर्वर्स के जरिए डेटा को स्टोर, प्रोसेस, मैनेज और जरूरत पड़ने पर प्राप्त करने की सुविधा देता है। स्थानीय डिवाइसेज या ऑन–प्रिमाइस सर्वर्स पर पूरी तरह निर्भर रहने के बजाय, क्लाउड प्लेटफॉर्म डेटा और एप्लिकेशन्स को रिमोट इंफ्रास्ट्रक्चर पर चलाने की सुविधा देते हैं। क्लाउड को एक डिजिटल वेयरहाउस की तरह समझा जा सकता है। जैसे एक भौतिक वेयरहाउस में सामान स्टोर किया जाता है, वैसे ही क्लाउड में डेटा स्टोर किया जाता है, एप्लिकेशन्स चलाए जाते हैं, बैकअप तैयार किए जाते हैं और कहीं से भी सुरक्षित एक्सेस की सुविधा मिलती है। आज बैंक, अस्पताल, निजी कंपनियां और सरकारी एजेंसियां अपने महत्वपूर्ण कामकाज और डिजिटल सेवाओं को चलाने के लिए क्लाउड सेवाओं पर निर्भर हैं। जैसे–जैसे जीवन और कारोबार से जुड़े अधिक पहलू ऑनलाइन हो रहे हैं, डेटा की सुरक्षा जरूरी हो गई है। व्यक्तिगत, वित्तीय और कारोबारी जानकारी अब एक मूल्यवान संपत्ति है। इस जानकारी को नुकसान, दुरुपयोग, चोरी या अनधिकृत एक्सेस से सुरक्षित रखना जरूरी है। डेटा ब्रीच से पहचान की चोरी, वित्तीय धोखाधड़ी, ग्राहकों के भरोसे को नुकसान और जरूरी सेवाओं में व्यवधान जैसी स्थितियां पैदा हो सकती हैं। प्रभावी डेटा प्रोटेक्शन यह सुनिश्चित करने में मदद करता है कि जानकारी सुरक्षित और सटीक रहे और जरूरत पड़ने पर उपलब्ध रहे। स्पैम, फिशिंग और ऑनलाइन ध ोखाधड़ी के बढ़ते मामलों से मजबूत सुरक्षा उपायों की जरूरत और स्पष्ट होती है। इन खतरों से निपटने के लिए टेलीकॉम कंपनियां अब एआई आधारित समाधानों का तेजी से इस्तेमाल कर रही हैं। उदाहरण के लिए एयरटेल के एआई आधारित एंटी स्पैम समाधान ने अब तक 93 अरब से अधिक स्पैम कॉल और 4 अरब स्पैम संदेशों की पहचान की है। इसके अलावा 14 लाख से ज्यादा धोखाधड़ी वाले लिंक को ब्लॉक करके डिजिटल भरोसे और उपयोगकर्ता सुरक्षा को मजबूत करने में मदद मिली है। स्वायत्त क्लाउड ऐसा क्लाउड वातावरण है, जिसे किसी देश के कानूनी और नियामकीय अधि ाकार क्षेत्र के भीतर डेटा और क्लाउड संचालन बनाए रखने के लिए तैयार किया जाता है। भारत में इसका मतलब है कि डेटा को भारतीय कानूनों और सुरक्षा ढांचे के तहत स्टोर, मैनेज और नियंत्रित किया जाता है। इसे इस तरह समझा जा सकता है कि मूल्यवान दस्तावेजों को विदेश के बजाय भारत में बैंक लॉकर में रखा जाए। स्वायत्त क्लाउड डेटा पर अधिक नियंत्रण और निगरानी सुनिश्चित करने में मदद करता है। स्वायत्त क्लाउड केवल डेटा को भौतिक रूप से स्टोर करने तक सीमित नहीं है। इसमें मेटाडेटा, बैकअप, एन्क्रिप्शन की, एक्सेस परमिशन और क्लाउड–मैनेजमेंट सिस्टम पर पूरा नियंत्रण भी शामिल है। इससे संस्थान संवेदनशील जानकारी की बेहतर सुरक्षा कर सकते हैं और अनुपालन संबंधी आवश्यकताओं को पूरा कर सकते हैं। भारत में डेटा होस्ट करने से कानूनी, नियामकीय और परिचालन स्तर पर अधिक नियंत्रण मिलता है। संस्थानों को यह बेहतर जानकारी रहती है कि डेटा कहां स्टोर है, उसे कैसे प्रोसेस किया जा रहा है और कौन उसे एक्सेस कर सकता है। बैंकिंग, स्वास्थ्य सेवा, सरकारी सेवाओं, कराधान, रक्षा और महत्वपूर्ण बुनियादी इंफ्रास्ट्रक्चर जैसे क्षेत्रों के लिए यह खास तौर पर महत्वपूर्ण है, जहां डेटा सुरक्षा और अनुपालन सर्वोच्च प्राथमिकता रखते हैं। डेटा को भारत के भीतर रखने से विदेशी कानूनी अधिकार क्षेत्रों के संपर्क में आने का जोखिम भी कम किया जा सकता है। इससे संस्थान राष्ट्रीय डेटा गवर्नेंस संबंधी आवश्यकताओं के साथ बेहतर तालमेल बना सकते हैं। 'एयरटेल ने भारत का पहला स्वायत्त टेल्को. ग्रेड क्लाउड किया लॉन्च'

एयरटेल ने अगस्त 2025 में एक्सटेलिफाय के जरिए एयरटेल क्लाउड लॉन्च करके डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर और डेटा संप्रभुता के क्षेत्र में अपनी स्थिति मजबूत की। इसके साथ एयरटेल भारत का पहला टेलीकॉम ऑपरेटर बना, जिसने स्वायत्त, टेल्को.ग्रेड क्लाउड प्लेटफॉर्म पेश किया। यह प्लेटफॉर्म मूल रूप से एयरटेल के अपने डिजिटल इकोसिस्टम को सपोर्ट करने के लिए बनाया गया था और इसे प्रति मिनट 1.4 अरब तक ट्रांजैक्शन संभालने के लिए वास्तविक परिस्थितियों में परखा गया है। सॉवरेन.बाय. डिजाइनध स्वायत्त.डिजाइन आर्किटेक्चर के साथ तैयार एयरटेल क्लाउड यह सुनिश्चित करता है कि डेटा, इंफ्रास्ट्रक्चर और कंट्रोल.प्लेन ऑपरेशन्स पूरी तरह भारत में होस्ट और नियंत्रित किए जाएँ। इससे एंटरप्राइजेज को डेटा रेजिडेंसी, सुरक्षा और अनुपालन संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने में मदद मिलती है। एयरटेल के अगली पीढ़ी के डेटा सेंटर्स और देशभर में फैले नेटवर्क पर निर्मित यह प्लेटफॉर्म 99.99: अपटाइम, जियो.रिडंडेंसी, एडवांस्ड डिजास्टर रिकवरी, इम्प्यूटेबल बैकअप और लगातार डेटा रेप्लिकेशन की सुविधा देता है। यह प्लेटफॉर्म आईएएएस, पीएएएस और जेनरेटिव एआई आधारित सेवाओं की पूरी श्रृंखला उपलब्ध कराता है। इससे एंटरप्राइजेज और सरकारी संगठन मिशन.क्रिटिकल वर्कलोड्स को सुरक्षित तरीके से चला सकते हैं, डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन को गति दे सकते हैं और अपने डेटा पर अधिक नियंत्रण बनाए रख सकते हैं। मेइटी सर्टिफिकेशन्स और एयरटेल के विश्वसनीय इंफ्रास्ट्रक्चर पर आधारित एयरटेल क्लाउड एक सुरक्षित, स्थानीय स्तर पर नियंत्रित क्लाउड एनवायरनमेंट उपलब्ध कराता है, जिसे भारतीय बाजार की जरूरतों के अनुरूप तैयार किया गया है।

आज भारत में निर्मित और भारत के लिए तैयार एयरटेल क्लाउड प्लेटफॉर्म देशभर के एंटरप्राइजेज को सेवाएँ उपलब्ध कराता है और भारत का पहला टेल्को.ग्रेड क्लाउड प्लेटफॉर्म है।

पिता पुत्र समेत पांच को उम्र कैद 11 वर्ष पूर्व पुरानी रंजिश को लेकर गोली मारकर हुई थी हत्या

ब्यूरो प्रमुख
विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर। यूपी के जौनपुर में अपर सत्र न्यायाधीश चतुर्थ रूपाली सक्सेना की अदालत ने सिकरारा थाना क्षेत्र के हीरापुर गांव में वादिनी के पति राजेंद्र प्रसाद सिंह की गोली मारकर हत्या करने के मामले में पिता पुत्र समेत पांच आरोपियो को बुधवार को कोर्ट ने उम्र कैद एवं पच्चीस–पच्चीस हजार रुपए जुर्माना की सजा सुनाया। जुर्माना अदा न करने पर 6 माह अतिरिक्त कारावास भुगतना होगा इस संबंध में सरकारी अधिवक्ता आशीष कुमार सिंह ने बताया कि वादिनी दुर्गा देवी ने घटना की प्राथमिकी सिकरारा थाने में दर्ज कराया था कि 3 जून 2015 को 8रू30 बजे रात वादिनी अपने पति राजेंद्र के साथ मड़हे में बैठी थी कि अचानक पट्टीदार वीरेन्द्र प्रताप सिंह, उनके लड़के पवन, दीपक सिंह,सोनू सिंह व प्रिंस सिंह लाठी डंडा व असलहे से लैस होकर मड़हे के पास आकर गालियां देने लगे।सोनू सिंह ने अन्य आरोपियों के ललकारने पर पति राजेंद्र को गोली मार दिया। घटना के बाद आरोपी भाग गए। पति को पहले जिला चिकित्सालय फिर वाराणसी ले जाया गया।दौरान इलाज उनकी मृत्यु हो गई। आरोपी सोनू की निशानदेही पर आलाकत्ल तमंचा बरामद हुआ था।पुलिस ने विवेचना कर केस डायरी कोर्ट में दाखिल किया सरकारी वकील आशीष कुमार सिंह ने कोर्ट में गवाहों का बयान अंकित कराया कोर्ट ने पत्रावली में उपलब्ध साक्ष्यों के आधार पर दोनों पक्षों की बहस सुनने के बाद कोर्ट ने हत्या के आरोप में दोषी पाते हुए उम्र कैद की सजा सुनाई।

'लखनऊ में एनसीसी कैडेट्स ने लिया टीबी मुक्त भारत का संकल्प, मेगा सेमिनार का आयोजन'

ब्यूरो चीफ आर एल पाण्डेय

'लखनऊ।' राष्ट्रीय स्वास्थ्य और जन कल्याण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से 63 यूपी बटालियन एनसीसी, लखनऊ द्वारा श्टीबी मुक्त भारतश विषय पर एक विशाल जागरूकता सेमिनार का आयोजन किया गया। महानगर स्थित मोंटफोर्ट इंटर कॉलेज के ऑडिटोरियम में आयोजित इस कार्यक्रम में लखनऊ ग्रुप के अंतर्गत आने वाली सभी बटालियनों के लगभग 200 एनसीसी कैडेट्स ने पूरे उत्साह के साथ प्रतिभाग किया। कार्यक्रम में विभिन्न बटालियनों के एसोसिएट एनसीसी ऑफिसर्स (एएनओ) और परमानेंट इंस्ट्रक्टर (पीआई) स्टाफ ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। 'सकारात्मक बदलाव ला सकते हैं युवारू' ब्रिगेडियर पुनीत श्रीवास्तव कार्यक्रम के मुख्य अतिथि लखनऊ एनसीसी ग्रुप के ग्रुप कमांडर ब्रिगेडियर पुनीत श्रीवास्तव (वीएसएम) रहे। कैडेट्स को प्रेरित करते हुए मुख्य अतिथि ने कहा कि युवा शक्ति समाज में बड़ा बदलाव ला सकती है। उन्होंने सामाजिक जागरूकता अभियानों में कैडेट्स की भागीदारी को महत्वपूर्ण बताते हुए एक सरल गणित साझा किया। उन्होंने कहा, ष्यदि यहां मौजूद 200 कैडेट्स में से प्रत्येक कैडेट समाज के 5 लोगों या परिवारों को जागरूक करे, तो हम सीधे 1000 परिवारों तक पहुंच सकते हैं। इस तरह एक मजबूत श्रृंखला बनाकर हम भारत को पूरी तरह टीबी मुक्त बनाने के संकल्प को सिद्ध कर सकते हैं।

'ष्डिजिटल टूल और विशेषज्ञ' सलाह कार्यक्रम के मुख्य वक्ता जिला क्षय रोग अधिकारी डॉ. अतुल कुमार सिंघल ने अपनी मेडिकल टीम के साथ कैडेट्स को टीबी के लक्षण, बचाव, समय पर जांच और उपचार के बारे में विस्तार से तकनीकी जानकारी दी। उन्होंने युवाओं से डिजिटल माध्यम का उपयोग करने की अपील करते हुए मोबाइल में क्षय रोग से जुड़ा आधिकारिक सरकारी ऐप इंस्टॉल करने को कहा। उन्होंने बताया कि यह ऐप टीबी से निपटने और त्वरित स्वास्थ्य सहायता प्राप्त करने में बेहद मददगार साबित होगा। इस सत्र के बाद स्वास्थ्य मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा जारी देशव्यापी शपथ के तहत सभी 200 कैडेट्स ने अपने स्तर पर समाज में जागरूकता फैलाने का सामूहिक संकल्प लिया।

'स्मृति चिन्ह भेंट कर जताया आभार' कार्यक्रम के दौरान 63 यूपी बटालियन एनसीसी लखनऊ के कमांडिंग ऑफिसर व नोडल अधिकारी कर्नल अनिल कुमार शर्मा ने मुख्य वक्ता जिला क्षय रोग अधिकारी डॉ. अतुल कुमार सिंघल को उनके बहुमूल्य मार्गदर्शन के लिए एक स्मृति चिन्ह (मोमेंटो) भेंट कर सम्मानित किया। इसके साथ ही कार्यक्रम की शुरुआत पर्यावरण संरक्षण के संदेश के साथ हुई थी, जहां विशिष्ट अतिथि मोंटफोर्ट इंटर कॉलेज के प्रधानाचार्य ब्रदर जीनू अब्राहम ने मुख्य अतिथि ब्रिगेडियर पुनीत श्रीवास्तव को एक पौधा भेंट कर उनका स्वागत किया।

यह पूरा गरिमामयी कार्यक्रम कर्नल अनिल कुमार शर्मा के कुशल दिशा–निर्देशन में आयोजित किया गया। वहीं, मोंटफोर्ट इंटर कॉलेज के एसोसिएट एनसीसी ऑफिसर (एएनओ) मेजर राजन सिंह परिहार व सूबेदार मेजर अरविंद कुमार के नेतृत्व और सीधे पर्यवेक्षण में पूरे सेमिनार का सफल संचालन संपन्न हुआ।

बस की टक्कर से स्कूल वैन पलटी, सात बच्चे घायल सभी की हालात स्थिर

ब्यूरो प्रमुख
विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर,। यूपी के जौनपुर में मुंगराबादशाहपुर थाना क्षेत्र के सुजानगंज मार्ग पर उकनी गांव के पास गुरुवार को तेज रफ्तार प्राइवेट बस ने डीआरएम पब्लिक स्कूल मधुपुर की स्कूल वैन में टक्कर मार दी। हादसे में वैन सड़क किनारे पलट गई। वैन में सवार सात बच्चे घायल हो गए। इनमें तीन बच्चों को गंभीर हालत में जिला अस्पताल रेफर किया गया, जहां उनकी स्थिति खतरे से बाहर बताई गई है। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार स्कूल वैन मुंगराबादशाहपुर की ओर से सुजानगंज जा रही थी। इसी दौरान पीछे से आ रही बस ने ओवरटेक करने का प्रयास किया कि वैन के चालक ने अचानक बिना इंडिकेटर दिए वाहन को दाईं ओर मोड़ दिया। तेज रफ्तार होने के कारण बस चालक वाहन पर नियंत्रण नहीं रख सका और बस ने वैन में साइड से टक्कर मार दी। टक्कर के

बाद वैन अनियंत्रित होकर सड़क किनारे पलट गई। घटना के बाद मौके पर चीख–पुकार मच गई। आसपास के ग्रामीणों ने तत्काल पहुंचकर वैन में फंसे बच्चों को बाहर निकाला। सूचना पर मुंगराबादशाहपुर पुलिस पहुंची और सभी घायलों को सीएचसी सुजानगंज भेजा गया। घायल बच्चों में आदित्य यादव (11), सिद्धार्थ यादव (10), प्रभाष यादव (12), अनिरुद्ध यादव (10), आर्यन यादव (10), आकाश तिवारी (10) और शिवम तिवारी (8) शामिल हैं। सभी पवारा थाना क्षेत्र के निवासी बताए गए हैं। सीएचसी में प्राथमिक उपचार के बाद सिद्धार्थ यादव, प्रभाष यादव और आदित्य यादव को जिला अस्पताल रेफर किया गया। अन्य बच्चों का उपचार कर उन्हें चिकित्सकीय निगरानी में रखा गया। घटना की जानकारी मिलते ही जिला अस्पताल पहुंच कर जिलाधिकारी ने बच्चों का हालचाल लिया। जिलाधिकारी सैमुअल पॉल एन ने बताया कि घायल बच्चों का उपचार कराया जा रहा है और सभी की स्थिति सामान्य है। बेसिक शिक्षा अधिकारी समीर कुमार ने भी जिला अस्पताल पहुंचकर बच्चों के स्वास्थ्य की जानकारी ली। उन्होंने बताया कि तीन बच्चों को जिला अस्पताल लाया गया था, जहां उनका उपचार जारी है। प्रत्यक्षदर्शी ग्राम प्रधान शैलेश सिंह ने बताया कि बस काफी तेज गति से आ रही थी। हादसे के बाद स्थानीय लोगों ने तत्काल बच्चों को बाहर निकाला। पुलिस ने घटनास्थल का निरीक्षण कर आवश्यक वैधानिक कार्रवाई शुरू कर दी है।

आईफा कॉनेक्स एडिशन 3 में संगीत की बदलती दुनिया पर सितारों ने की चर्चा, आंद्रे टिमिन्स ने साझा किया नए मंच का विजन

ब्यूरो चीफ आर एल पाण्डेय

मुंबई। आईफा कॉनेक्स एडिशन 3 में संगीत और मनोरंजन जगत की कई चर्चित हस्तियां एक मंच पर जुटीं और संगीत की तेजी से बदलती दुनिया पर विस्तार से चर्चा की। "संगीत के नए नियम दृ कलाकार, एल्गोरिदम और दर्शकरू आज किसी गाने को हिट कौन बनाता है?" विषय पर आयोजित इस विशेष सत्र में तकनीक, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, एल्गोरिदम, डिजिटल दर्शकों और बदलते दौर में कलाकारों की भूमिका पर विचार साझा किए गए। कार्यक्रम का प्रमुख आकर्षण आईफा के सह–संस्थापक आंद्रे टिमिन्स रहे, जिन्होंने आईफा कॉनेक्स के पीछे की सोच और भविष्य की रूपरेखा सामने रखी। उन्होंने कहा कि लंबे समय से ऐसे मंच की जरूरत महसूस की जा रही थी, जहां मनोरंजन उद्योग से जुड़े लोग रेड कार्पेट, औपचारिकताओं और व्यावसायिक एजेंडे से आगे बढ़कर सहज और प्रेरणादायक माहौल में सार्थक बातचीत कर सकें। आंद्रे टिमिन्स के मुताबिक आईफा कॉनेक्स को केवल एक और उद्योग आयोजन के रूप में नहीं, बल्कि रचनात्मक समुदाय के लिए ऐसे मंच के रूप में विकसित किया जा रहा है, जहां मनोरंजन, संगीत, फैशन, मीडिया, कारोबार, संस्कृति और नवाचार एक–दूसरे से जुड़ सकें। इसका उद्देश्य स्थापित कलाकारों के साथ नई प्रतिभाओं को भी एक साथ लाना और सहयोग, विचार–विमर्श तथा नए प्रयोगों को बढ़ावा देना है। उन्होंने कहा कि आईफा हमेशा सिनेमा और संस्कृति के माध्यम से दुनिया को जोड़ने में विश्वास करता रहा है और आईफा कॉनेक्स इसी सोच का आधुनिक विस्तार है। उनका लक्ष्य इसे भविष्य में रचनात्मक सोच, सहयोग और सांस्कृतिक संवाद के लिए एक नियमित मंच के रूप में विकसित करना है। सत्र का संचालन तरसामे मित्तल ने किया। वहीं यूट्यूब के भारत में संगीत साझेदारी, कलाकार एवं लेबल संबंधों के प्रमुख रामप्रसाद सुंदर ने डिजिटल दौर में भारतीय, क्षेत्रीय और स्वतंत्र कलाकारों की बढ़ती वैश्विक पहुंच पर बात की। मीका सिंह ने कहा कि तकनीक संगीत के दर्शकों तक पहुंचने का तरीका बदल सकती है, लेकिन गीत की भावनाएं और कलाकार की आवाज हमेशा उसके केंद्र में रहेंगी। नोरा फतेही ने संगीत के भाषाई और भौगोलिक सीमाओं से आगे बढ़ने की संभावनाओं पर चर्चा की। वहीं राजा कुमारी ने एल्गोरिदम, आंकड़ों और वायरल संस्कृति के दौर में नवाचार के साथ अपनी रचनात्मक पहचान और प्रामाणिकता बनाए रखने को जरूरी बताया। आईफा कॉनेक्स एडिशन 3 ने यह संदेश दिया कि डिजिटल युग में संगीत का भविष्य कलाकारों, दर्शकों और तकनीक के बदलते रिश्ते से तय हो रहा है और यही बदलाव यह निर्धारित कर रहा है कि कोई गीत कैसे खोजा, सुना और लोकप्रिय बनाया जाता है।

राजस्व वादों के निस्तारण में तेजी लाएं अधिकारी, बड़े बकायेदारों से वसूली पर जोर -जिलाधिकारी

ब्यूरो प्रमुख
विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर,। यूपी के जौनपुर में राजस्व कार्यों, आपदा प्रबंधन एवं मुख्यमंत्री डैशबोर्ड से संबंधित कार्यों की प्रगति की समीक्षा के लिए गुरुवार को बैठक आयोजित की गई। बैठक में विभिन्न विभागों और पटलों पर संचालित कार्यों की बिंदुवार समीक्षा करते हुए अधिकारियों को लंबित प्रकरणों का समयबद्ध एवं गुणवत्तापूर्ण निस्तारण सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए। बैठक में संग्रह कार्यालय, नजारत सहित विभिन्न पटलों पर लंबित ऑडिट आपत्तियों की समीक्षा की गई। अधिकारियों एवं कर्मचारियों को निर्देशित किया गया कि सभी लंबित ऑडिट आपत्तियों का प्राथमिकता के आधार पर निस्तारण कर रिपोर्ट उपलब्ध कराई जाए। साथ ही धारा–33, धारा–34, धारा–24 एवं ध ारा–67 से संबंधित राजस्व वादों के शीघ्र निस्तारण पर विशेष जोर दिया गया। राजस्व वसूली की समीक्षा के दौरान उपजिलाधिकारियों को बड़े

बकायेदारों से प्रभावी ढंग से वसूली सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए। अमीनों के कार्यों की भी बिंदुवार समीक्षा की गई। उन्हें निर्धारित लक्ष्य के अनुरूप कार्रवाई करते हुए राजस्व वसूली में तेजी लाने को कहा गया। अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिए गए कि अमीनों के माध्यम से राजस्व वसूली सुनिश्चित की जाए और इसमें किसी भी स्तर पर लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। बैठक में एंटी भू–माफिया अभियान की भी समीक्षा की गई। उपजिलाधिकारियों को सरकारी भूमि को अवैध कब्जों से मुक्त कराने की कार्रवाई में तेजी लाने के निर्देश दिए गए। अधिकारियों से कहा गया कि लंबित मामलों का जल्द से जल्द निस्तारण कर निर्धारित समय सीमा के भीतर कार्य पूरा किया जाए। इस अवसर पर अपर जिलाधिकारी वित्त एवं राजस्व परमानंद झा, मुख्य राजस्व अधिकारी अजय अंबष्ठ, नगर मजिस्ट्रेट, उपजिलाधिकारीगण सहित अन्य संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे।

तुलसीधाम में गोस्वामी तुलसीदास जयंती सम्पन्न

ब्यूरो चीफ आर एल पाण्डेय

लखनऊ। श्री रामचरितमानस के रचयिता गोस्वामी तुलसीदास की जन्म भूमि तुलसीधाम राजापुर सूकरखेत विकासखंड परसपुर तहसील करनैलगंज जनपद गोंडा में तुलसी जयंती का कार्यक्रम आयोजित किया गया। सनातन धर्म परिषद एवं श्री तुलसी जन्मभूमि न्यास के तत्वावधान में श्रावण शुक्ल सप्तमी बुधवार 19 अगस्त 2026 को श्री रामचरितमानस अखंड पाठ 15 दिनों से चल रहे श्री सीताराम नाम संकीर्तन श्रद्धालु भक्त जनों द्वारा बड़ी श्रद्धा एवं निष्ठा के साथ किया गया। विदित हो कि श्रीरामचरितमानस का अखंड पाठ पूर्व से ही चल रहा है। देश के कोने – कोने से संत–महात्मा विद्वान साहित्यकार, शोधार्थी एवं पर्यटकों ने कार्यक्रम में भाग लिया । विद्वानों ने तुलसी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व तथा श्री राम कथा पर विशद विचार व्यक्त किये । इस अवसर पर पधारे विद्वानों एवं संत महात्माओं को तुलसी सम्मान से सम्मानित किया गया। श्रद्धालु भक्त जनों तथा विद्वानों ने गोस्वामी तुलसीदास की जन्म भूमि मंदिर का दर्शन पूजन और परिक्रमा किया । इसके साथ ही श्रद्धालुओं ने गोस्वामी जी के पिता आत्माराम दुबे के नाम आत्माराम टेपरा तुलसी वन का अवलोकन भी किया। तत्पश्चात विशाल भंडारा का कार्यक्रम संपन्न हुआ । डॉ स्वामी भगवदाचार्य अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष सनातन धर्म परिषद ने उक्त जानकारी दी।

वननेस वन-प्रकृति के साथ समरसता, हरित भविष्य की ओर संत निरंकारी मिशन का जन आंदोलन

ब्यूरो प्रमुख
विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर,। यूपी के जौनपुर में बाबा हरदेव सिंह जी का दिव्य संदेश 'प्रदूषण अंदर हो या बाहर दोनों ही हानिकारक है', केवल पर्यावरण संरक्षण का आह्वान नहीं, बल्कि मानवीय चेतना को निर्मल और प्रकृति के प्रति उत्तरदायी बनाने का प्रेरणास्रोत है। इसी प्रेरणा को साकार रूप देते हुए संत निरंकारी मिशन अपनी पर्यावरण संरक्षण की पहल 'वननेस वन–प्रकृति के साथ समरस्ता' के माध्यम से हरित, संतुलित एवं सतत भविष्य के निर्माण हेतु निरंतर समर्पित भाव से कार्य कर रहा है। सतगुरु माता सुदीक्षा जी महाराज एवं निरंकारी राजपिता रमित जी के पावन आशीर्वाद से अगस्त 2021 में प्रारम्भ हुई यह अनूठी पहल आज देशव्यापी जनआंदोलन का स्वरूप ग्रहण कर चुकी है। इसका उद्देश्य केवल वृक्षारोपण करना नहीं, बल्कि प्रकृति के साथ आत्मीय संबंध को पुनर्जीवित करना, पर्यावरण संरक्षण को जीवन–मूल्य के रूप में स्थापित करना तथा आने वाली पीढ़ियों के लिए हरित, स्वच्छ एवं संतुलित पृथ्वी का निर्माण करना है। समय के साथ यह अभियान निरंतर विस्तार पाते हुए देशभर में लाखों लोगों को प्रकृति के प्रति संवेदनशील बनने की प्रेरणा दे रहा है। संत निरंकारी मण्डल के सचिव आदरणीय श्री जोगिन्दर सुखीजा जी ने जानकारी

देते हुए बताया कि भारत के विभिन्न राज्यों में अब तक लगभग 350 वृक्ष समूह स्थापित किए जा चुके हैं, जबकि 600 से अधिक 'वननेस वन' स्थलों पर श्रद्धालु एवं सेवादार पूर्ण समर्पण के साथ इन वृक्षों का संरक्षण एवं संवर्धन कर रहे हैं। यह अभियान केवल वृक्ष लगाने तक सीमित नहीं है, बल्कि समाज में प्रकृति के प्रति जागरूकता, संवेदनशीलता, पर्यावरणीय उत्तरदायित्व तथा सामूहिक सहभागिता की संस्कृति को भी सुदृढ़ कर रहा है। इसी सतत प्रयास को आगे बढ़ाते हुए संत निरंकारी चौरिटेबल फाउंडेशन द्वारा 23 अगस्त, रविवार को इस महाअभियान के छठे चरण का शुभारंभ किया जा रहा है। यह अभियान देशभर के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों सहित 630 स्थानों पर एक साथ आयोजित किया जाएगा। इस अवसर पर मिशन के लाखों श्रद्धालु एवं स्वयंसेवक समर्पित भाव से सहभागिता निभाते हुए लगभग 10 लाख पौधों का रोपण करेंगे। यह व्यापक अभियान पर्यावरण संरक्षण के प्रति जन–जागरूकता बढ़ाने के साथ–साथ हरित एवं स्वस्थ भविष्य के निर्माण की दिशा में मंत्रएक महत्वपूर्ण कदम साबित होगा। इस अभियान की विशेषता यह है कि मिशन केवल पौधे लगाने तक अपनी जिम्मेदारी सीमित नहीं रखता, बल्कि उन्हें वृक्ष बनने तक निरंतर संरक्षण देने का संकल्प भी निभाता है। प्रत्येक पौधे की तीन से पाँच वर्षों तक नियमित देखभाल की जाएगी, ताकि वे विकसित होकर सघन लघु वनों का रूप लें, जैव विविधता को समृद्ध करें, स्थानीय इकोसिस्टम को सशक्त बनाएँ और आने वाली पीढ़ियों को स्वच्छ एवं हरित वातावरण प्रदान कर सकें। आज जब विश्व जलवायु परिवर्तन, बढ़ते प्रदूषण और प्राकृतिक संसाधनों के पतन जैसी गंभीर चुनौतियों का सामना कर रहा है, ऐसे समय में संत निरंकारी मिशन का यह हरित संकल्प प्रत्येक नागरिक को प्रकृति के साथ सह–अस्तित्व का संदेश देता है। यह अभियान हमें स्मरण कराता है कि धरती केवल हमारी विरासत नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के प्रति हमारी सांझा जिम्मेदारी है। आइए, एक पौधा लगाकर, उसे वृक्ष बनाकर और प्रकृति के संरक्षण का संकल्प लेकर हम सभी इस हरित परिवर्तन के सहभागी बनें।

जौनपुर में महिलाओं का प्रदर्शन ट्रांसफार्मर क्षमता बढ़ाने की मांग

ब्यूरो प्रमुख
विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर,। जौनपुर के केराकत तहसील क्षेत्र में विद्युत वितरण उपखंड–तृतीय, थानागद्दी कार्यालय पर गुरुवार को नाऊपुर गांव की महिलाओं ने धरना–प्रदर्शन किया। सतीश सिंह के नेतृत्व में इन महिलाओं ने गांव में 63 केवीए के स्थान पर 100 केवीए क्षमता का ट्रांसफार्मर लगाए जाने की मांग की। ग्रामीणों के अनुसार, गांव में लगा 63 केवीए का ट्रांसफार्मर अधिक लोड के कारण बार–बार जल जाता है। इससे उन्हें लगातार बिजली कटौती और अन्य विद्युत समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। ग्रामीणों का आरोप है कि इस समस्या को लेकर कई महीनों से विद्युत विभाग के एसडीओ और जेई से शिकायतें की जा रही हैं, लेकिन अधिकारियों द्वारा

केवल आश्वासन दिए गए और स्थायी समाधान नहीं किया गया। धरने की सूचना मिलने पर 112 नंबर की पुलिस टीम मौके पर पहुंची। पुलिस ने प्रदर्शन कर रहे लोगों को समझाने–बुझाने का प्रयास किया। हालांकि, प्रदर्शनकारियों ने अपनी मांग पूरी होने तक समस्या के समाधान के लिए उच्चाधिकारियों से शिकायत करने की बात कही। बाद में प्रदर्शनकारियों ने धरना समाप्त कर दिया। उन्होंने विद्युत समस्या के स्थायी समाधान और 63 केवीए के स्थान पर 100 केवीए का ट्रांसफार्मर लगाए जाने की मांग दोहराई। ग्रामीणों ने मुख्यमंत्री से भी इस मामले का संज्ञान लेकर शीघ्र निस्तारण कराने की अपील की है। ग्रामीणों ने चेतावनी दी है कि यदि जल्द ही ट्रांसफार्मर की क्षमता नहीं बढ़ाई गई, तो वे दोबारा धरना–प्रदर्शन करने के लिए मजबूर होंगे।

आरपीएल आधारित कृषक प्रशिक्षण का हुआ शुभारंभ

ब्यूरो प्रमुख
विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर। कृषि विभाग द्वारा गुरुवार को कृषि विज्ञान केन्द्र बक्शा में सब मिशन ऑन एग्रीकल्चर एक्सटेंशन (आत्मा) योजना अंतर्गत जिले के किसानों के लिए विशेष आरपीएल (रिकॉग्निशन आफ प्रायर लर्निंग) आधारित कृषि प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। यह प्रशिक्षण 20 अगस्त से 1 सितंबर तक आयोजित किया जाएगा, ब्लाक वार प्रत्येक प्रशिक्षण दो दिनों का होगा इसमें किसानों को उन्नत कृषि तकनीकी, फसल संरक्षण, बीज चयन, मृदा परीक्षण, जल प्रबंधन, जैविक एवं प्राकृतिक खेती, कृषि उपकरणों का उपयोग और विभिन्न सरकारी योजनाओं की विस्तृत जानकारी दी जाएगी। उप परियोजना निदेशक (आत्मा) डा. रमेश चंद्र यादव ने बताया कि प्रशिक्षित किसानों को भविष्य में कृषि आधारित योजनाओं में प्राथमिकता दी जाएगी, प्रतिभागी किसान दो दिन प्रशिक्षण प्राप्त करेंगे उन्हें प्रशिक्षण प्रमाणपत्र उपलब्ध कराया जाएगा उन्होंने बताया कि ऐसे प्रशिक्षण कार्यक्रम ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने और कृषि क्षेत्र में नवाचार को बढ़ावा देने में सहायक होंगे यह कार्यक्रम किसानों के लिए एक सुनहरा मौका है जो उनकी खेती को नई दिशा दे सकता है। उन्होंने जनपद के किसानों से प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रतिभाग करने की अपील किया। वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष डॉ. कंचन द्वारा किसानों को संतुलित थाली के संबंध में बताया कि आप किचन गार्डन तैयार कर कम लागत में बेहतर लाभ लेकर के अपनी समृद्धि कर सकते हैं। कृषि वैज्ञानिक डा. रत्नाकर पांडेय द्वारा बीज उत्पादन, श्री अन्य की खेती की जानकारी दी गई। डॉ. राजीव सिंह कृषि वैज्ञानिक द्वारा सब्जियों, फलों एवं फूलों की उन्नतशील खेती की तकनीकी जानकारी दी गई। इस मौके पर डा. रुपेश सिंह, डा. हरिओम वर्मा, विषय वस्तु विशेषज्ञ अशोक पाल, बीटीएम राजकुमार भारती सहित 110 किसान मौजूद रहे।

विश्वकर्मा समाज की एकजुटता को लेकर अहम बैठक, शिक्षा और सामाजिक विकास पर हुआ मंथन

देश की उपासना समाचार पत्र मुम्बई ब्यूरो चीफ धनन्जय विश्वकर्मा। मुंबई से इस वक्त की महत्वपूर्ण खबर सामने आ रही है, जहां विश्वकर्मा समाज की विभिन्न समितियों के बीच आपसी समन्वय और सामाजिक एकजुटता को मजबूत करने को लेकर एक अहम बैठक आयोजित की गई। बैठक में कलीना समिति के प्रतिनिधियों ने नायगांव स्थित एकार्थी फाउंडेशन समिति के पदाधिकारियों एवं सदस्यों से मुलाकात की। इस दौरान पिछले दिनों हुई आपसी भूल–चूक और मतभेदों को बातचीत के माध्यम से दूर करते तथा समाजहित में मिल–जुलकर आगे बढ़ने पर सकारात्मक चर्चा हुई। बैठक में समाज के बच्चों की शिक्षा, सामाजिक एवं नैतिक ज्ञान, युवाओं के भविष्य और विवाह संबंधी विषयों पर विशेष रूप से विचार–विमर्श किया गया। सदस्यों ने कहा कि समाज की नई पीढ़ी को शिक्षा के साथ संस्कार, सामाजिक जिम्मेदारी और सही दिशा देना समय की महत्वपूर्ण आवश्यकता है। बैठक में दोनों समितियों की ओर से अपने–अपने विचार और सुझाव रखे गए। सभी ने इस बात पर जोर दिया कि समाज के व्यापक हित के लिए आपसी मतभेदों को पीछे छोड़कर एकजुट होकर काम करना जरूरी है। "समाज तभी मजबूत और प्रगतिशील बनेगा, जब समाज की सभी समितियां एक–दूसरे का निरंतर सहयोग करें और समाजहित को सर्वोच्च प्राथमिकता दें।" इस बैठक का उद्देश्य आपसी समन्वय को मजबूत करना, समाज की नई पीढ़ी के भविष्य को बेहतर बनाना और शिक्षा एवं सामाजिक विकास के माध्यम से विश्वकर्मा समाज को नई दिशा देना रहा।

मुख्य विकास अधिकारी की अध्यक्षता में जिला सहकारी विकास समिति की बैठक सम्पन्न

'रिपोर्ट–जनार्दन श्रीवास्तव' 'हरदोई' मुख्य विकास अधिकारी नेहा ब्याडवाल की अध्यक्षता में स्वामी विवेकानंद सभागार में जिला सहकारी विकास समिति की बैठक सम्पन्न हुई। बैठक के दौरान जिले में सहकारी

समितियों के सुदृढ़ीकरण, अवस्थापना सुविधाओं के विकास, जनशक्ति की तैनाती एवं नवीन समितियों के गठन आदि।

तीज उत्सव में सजी हरियाली और संस्कृति की रंगारंग छटा

(राजन तिवारी सिटी रिपोर्टर)

अयोध्या। इनर व्हील क्लब ऑफ फैजाबाद द्वारा टिप्सी टाउन में तीज उत्सव का भव्य आयोजन किया गया। कार्यक्रम में क्लब की सदस्यों ने मनमोहक नृत्य प्रस्तुतियों और मधुर गीतों से समां बांध दिया। कार्यक्रम में नृत्य प्रस्तुतियों के साथ विभिन्न मनोरंजक खेल, रिकट, हाउजी और अंताक्षरी का भी आयोजन किया गया, जिसमें सभी ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।कार्यक्रम की संयोजक सपना रस्तोगी एवं सुमन पचेरीवाला रहीं। कार्यक्रम में जोनल हेड रीता खत्री, कोऑर्डिनेटर स्नेहलता अग्रवाल, क्लब अध्यक्ष रेनू रस्तोगी, उपाध्यक्ष रेनू सिंहल, सेक्रेटरी विधि अग्रवाल, ट्रेजरर नीता आचार्या, किरण सक्सेना सहित क्लब की अनेक सदस्य उपस्थित रहीं। क्लब की पूर्व अध्यक्ष बीना अग्रवाल, अनीता सराफ, स्वाति टंडन, एकता अग्रवाल, ममता सिंह, अंजू विकास, अंजू अग्रवाल एवं डिंपल बंसल सहित अन्य गणमान्य लोग भी कार्यक्रम में मौजूद रहे। कार्यक्रम में उर्मिला मिश्रा को तीज क्वीन चुना गया। रंगारंग प्रस्तुतियों, मनोरंजक गतिविधियों, उत्साह और पारंपरिक उल्लास से सराबोर यह तीज उत्सव सभी के लिए यादगार बन गया।

मुबारकगंज पीएचसी जाने वाली सड़क शतालाब मे हुई तब्दील

अयोध्या। सोहावल तहसील क्षेत्र के अंतर्गत प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र (पीएचसी) मुबारकगंज की ओर जाने वाला मार्ग अत्यंत जर्जर होकर जलभराव और कीचड़ के कारण पूरी तरह से श्तालाब में तब्दील हो चुका है।इस रास्ते पर बने गहरे गड्ढों और जमा पानी के चलते अस्पताल आने वाले मरीजों, विशेषकर गर्भवती महिलाओं के गिरने और चोटिल होने का खतरा लगातार बना रहता है, जिससे आपातकालीन एम्बुलेंस सेवाओं के आवागमन में भी भारी बाधा उत्पन्न हो रही है। मामले की गंभीरता को देखते हुए पीएचसी मुबारकगंज के प्रभारी चिकित्साधिकारी डॉ. महेंद्र वर्मा ने उप जिला अधिकारी जिलाधिकारी शशांक त्रिपाठी अयोध्या को ज्ञापन सौंपकर अवगत कराया है कि जर्जर सड़क और जलभराव से आए दिन मरीज दुर्घटना का शिकार हो रहे हैं। उन्होंने मरीजों व तीमारदारों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए इस महत्वपूर्ण सड़क का अविलंब पुनर्निर्माण कराने की मांग की है, ताकि क्षेत्र के हजारों लोगों को स्वास्थ्य सुविधाओं के लिए इस नारकीय स्थिति से न गुजरना पड़े। कांग्रेस नेता विमल गुप्ता ने भी उक्त सड़क तुरंत बनवाने की मांग की है

अयोध्या में सिंधी समाज के इष्ट देव प्रभु झूलेलाल का बने विश्वस्तरीय मंदिर

(डाक्टर अजय तिवारी जिला संवाददाता)

अयोध्या। रायपुर के विख्यात बाल कलाकार सक्षम कटारिया एवं टीम ने सिंधी गीतों एवं सिंधी कलाम से सर्व समाज का मन मोह लिया व 74 वें प्रभु झूलेलाल महोत्सव में ष्कश शाम सिंधियत के नामष् का

समारोहपूर्वक आगाज हुआ प्रभु झूलेलाल मंच के खचाखच्च भरे मैदान में सिंधु संस्कृति की झलक साफ देखने को मिली एवं सिंधी समाज के महिला ,पुरुष ,युवा वर्ग झूमते नाचते प्रभु झूलेलाल की स्तुति करते देर रात्रि 2 बजे तक नजर आए ।19 अगस्त 2026 प्रभु झूलेलाल महोत्सव की प्रथम संध्या का शुभारंभ मुख्य अतिथि साई नितिन राम जी व विशिष्ट अतिथि लक्ष्य रायचंदानी (उप कप्तान, अंडर 19 राष्ट्रीय क्रिकेट टीम) जी ने प्रभु झूलेलाल जी की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं प्रभु झूलेलाल जी की आरती के साथ दीप प्रज्वलन करके किया गया।कार्यक्रम की अध्यक्षता सिंधु सेवा समिति(रजि.) के अध्यक्ष अमृत राजपाल ने की व संचालन नरेन्द्र क्षेत्रपाल और सुखदेव साधवानी ने और प्रतिवेदन मंत्री पुरुषोत्तम दासवानी ने प्रस्तुत किया।मुख्य अतिथि को प्रभु झूलेलाल की प्रतिमा संस्था प्रबुद्धजन ने शाल पहनाकर व पुष्पगुच्छ व पाखर देकर स्वागत अभिनंदन किया।मुख्य अतिथि ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि सिंधी समाज हमेशा से पुरुषार्थी रहा है और देश सहित अयोध्या के विकास में सिंधी समाज की महत्वपूर्ण भूमिका रही है, सिंधी बच्चे प्रशासनिक सेवाओं में भी आगे आ रहे है ये गर्व का विषय है। और उनके पिता गोंडा के वरिष्ठ समाजसेवी संतोष रायचंदानी जी ने समाज मे एकजुटता का आह्वाहन किया।साथ ही मुख्य अतिथि जी ने विशेष योग्यता और स्नातक और परास्नातक मे विशेष स्थान पाने वालो को पुरस्कृत किया।इस मौके पर संस्था अध्यक्ष व पूर्व मंत्री अमृत राजपाल ने मुख्य अतिथि का आभार व्यक्त करते हुए तन मन धन से सभी दानदाताओं व सम्मानित पदाधिकारियों ,संत नवल राम दरबार सहित सिंधी समाज के अंतिम व्यक्ति का तन मन धन से सहयोग हेतु धन्यवाद ज्ञापित कर कहा कि सिंधु सेवा समिति आने वाले समय में सभी को साथ लेकर नए आयाम स्थापित करेगी और 21 अगस्त को शोभायात्रा में एकजुट होकर एकरूपता हेतु सफेद कुर्ता पैजामा,या श्वेत वस्त्र पहनने की सर्व सिंधी समाज से अपील की एवं शोभायात्रा में रामनगर से सभी को साथ चलने की अपील की।समिति के प्रवक्ता ध् मीडिया प्रभारी संदीप मंध्यान ने बताया कि हर वर्ष की भांति पुनः शोभा यात्रा मे बाहिराडे साहिब की महाआरती चौक मे उनके नेतृत्व मे साथियो और गणमान्य जन द्वारा की जाएगी।सिंधी सिंधी समाज को एक माला में पिरोने वाले सेंट्रल पंचायत के मुखिया पवन जीवानी, सेंट्रल पंचायत रामनगर के मुखिया ओम अंदानी, मुखिया राजकुमार जीवानी, मुखिया रोशन तोलानी, मुखिया गिरधारी चावला, मुखिया भीमन दास माखेजा, मुखिया धर्मपाल रावलानी, मुखिया देव कुमार, मुखिया राजकुमार मोटवानी, मुखिया सुनील रामानी, मुखिया दीपचंद भारतीय, मुखिया अशोक मंध्यान ष्सुखीष्, मुखिया राजा हेमनानी आदि का सम्मान माला पहनाकर संस्था द्वारा किया गया।समिति के संरक्षक मोहन मंध्यान, उपाध्यक्ष जे पी क्षेत्रपाल, वेद राजपाल, डॉक्टर महेश सुरतानी, संजय मदान, राकेश तलरेजा, उमेश जीवानी, पुरुषोत्तम दासवानी, कोषाध्यक्ष सुनील मंध्यान, राजीव मदान, राजकुमार रामानी, दीपक आहूजा, अजय कटारा, धीरज राजपाल, मुकेश तोलानी, संदीप मंध्यान, लक्ष्मण माखेजा, शंकर राजपाल, अशोक अंदानी,संतोष रायचंदानी ,सुखदेव साधवानी, कमल रावलानी, विकास आहूजा, मनीष मंध्यान, कैलाश साधवानी, गौरव मदनानी, एकांत, गोल्डी वासवानी, नरेश क्षेत्रपाल, सुमित माखीजा,बंटी माखेजा, कपिल हासानी, दीपक रामानी, अनुराग, सौरभ लखमानी, विनोद हिंगोरानी, संतोष रायचंदानी, विपिन खत्री, सहित सैकड़ो की सख्या में महिला, पुरुष, बच्चे प्रमुख रूप से रहे।

टीबी मुक्त भारत अभियान में स्वयंसेवकों को बनाया जाएगा टीबी योद्धा

(राजन तिवारी सिटी रिपोर्टर)

अयोध्या।टीबी मुक्त भारत अभियान के तहत अयोध्या जिले में समुदाय की भागीदारी बढ़ाने के लिए "माय भारत वालंटियर्स" को टीबी के प्रति जागरूक किया जा रहा है। भारत सरकार के केंद्रीय टीबी डिवीजन द्वारा पायलट प्रोजेक्ट के अंतर्गत देश के 52 जनपदों का चयन किया गया है, जिसमें उत्तर प्रदेश के सात जनपद शामिल हैं। अयोध्या भी इस पहल का हिस्सा है।अभियान के तहत जिले के मसौधा ब्लॉक के सिंहपुर हाजीपुर और मुमताजनगर तथा पुराबाजार ब्लॉक के सरैठी, बैसिंहपुर और कुशमहा गांवों का चयन किया गया है। इन क्षेत्रों में राष्ट्रीय क्षय उन्मूलन कार्यक्रम की टीम, जिला युवा अधिकारी और "माय भारत वालंटियर्स" संयुक्त रूप से लोगों को टीबी की रोकथाम, पहचान और उपचार के प्रति जागरूक करेंगे।इसी क्रम में 18 अगस्त को राजकीय टीबी क्लीनिक अयोध्या में "माय भारत वालंटियर्स" के कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण आयोजित किया गया। जिला क्षय रोग अधिकारी डॉ. संदीप कुमार शुक्ला और प्रभारी जिला युवा अधिकारी शुभम राजपूत ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्ज्वलित कर प्रशिक्षण कार्यक्रम का शुभारंभ किया। प्रशिक्षण में स्वयंसेवकों को टीबी रोग के लक्षण, संक्रमण फैलने के तरीके, जांच और उपलब्ध उपचार सेवाओं की जानकारी दी गई।प्रशिक्षण के दौरान स्वयंसेवकों को बताया गया कि टीबी के संभावित लक्षणों वाले लोगों को जांच के लिए प्रेरित करना और समय पर उपचार से जोड़ना अभियान की महत्वपूर्ण कड़ी है। जिला युवा अधिकारी ने स्वयंसेवकों से कहा कि वे समाज में टीबी के खिलाफ जागरूकता फैलाने के साथ लोगों को अपनी जिम्मेदारी निभाने के लिए प्रेरित करें। उन्होंने कहा कि सामुदायिक सहभागिता से ही टीबी मुक्त भारत के लक्ष्य को मजबूत आधार मिल सकता है।प्रभारी जिला पीपीएम कोऑर्डिनेटर प्रेम कुमार और एसटीएलएसएओ रत्नेश राठौर ने टीबी के लक्षण, जांच एवं उपचार, निक्षय मित्र योजना और टीबी मुक्त भारत एप की जानकारी दी। स्वयंसेवकों को चिन्हित क्षेत्रों के सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र, प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र और आयुष्मान आरोग्य मंदिर में उपलब्ध टीबी संबंधी सेवाओं के बारे में भी बताया गया। अभियान के तहत प्रशिक्षित "माय भारत वालंटियर्स" गांवों और वार्डों में लोगों से संवाद कर टीबी के प्रति जागरूकता बढ़ाएंगे तथा संभावित मरीजों को जांच और उपचार की सेवाओं से जोड़ने में स्वास्थ्य विभाग का सहयोग करेंगे। इससे टीबी की जल्द पहचान और समय पर उपचार को बढ़ावा मिलने की उम्मीद है।

पूर्व पीएम भारत रत्न स्वर्गीय राजीव गांधी की जयंती के अवसर पर कांग्रेस जनों ने उनके चित्र पर फूलमाला की अर्पित कर दी श्रद्धांजलि

(डाक्टर राजन तिवारी सिटी रिपोर्टर)

अयोध्या।भारत देश के पूर्व प्रधानमंत्री सूचना क्रांति के जनक भारत रत्न स्वर्गीय राजीव गांधी की जयंती के अवसर पर कांग्रेस जनों ने कांग्रेस कार्यालय कमला नेहरू भवन पर उनके चित्र पर फूलमाला अर्पित कर उनके विचारों को जन जन तक पहुँचाने का संकल्प लिया। तत्पश्चात एक गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसकी अध्यक्षता जिला कांग्रेस कमेटी के उपाध्यक्ष राम अवध पासी ने किया तथा संचालन जिला कांग्रेस प्रवक्ता शीतला पाठक ने कियागोष्ठी को संबोधित करते हुए कांग्रेस पार्टी के पूर्व जिला अध्यक्ष राजेंद्र प्रताप सिंह ने स्वर्गीय राजीव गांधी को एक महान दार्शनिक एवं दूरगामी सोच वाला व्यक्ति बताया।जिला कांग्रेस प्रवक्ता शीतला पाठक ने स्वर्गीय राजीव गांधी को सद्भावना एवं करुणा ,समान अधिकार का पक्षधर, प्रौद्योगिकी और संचार ,पंचायती राज और महिला सशक्तिकरण को राजनीति में आगे बढ़ाने की मजबूत पहल किया।कांग्रेस पार्टी के जिला उपाध्यक्ष राम अवध पासी ने स्वर्गीय राजीव गांधी को नए भारत के निर्माण में उनकी सोच की सराहना की और कहा उनके विचार आज भी प्रासंगिक हैं।पीसीसी सदस्य उग्रसेन मिश्रा ने कहा स्वर्गीय राजीव गांधी ने पंचायती राज के माध्यम से सत्ता का विकेंद्री करण किया और महिलाओं के अधिकारों को कानून बनाकर सुनिश्चित किया।गोष्ठी में उपस्थित प्रमुख लोगों में अशोक कनौजिया कविंद्र साहनी सेवादल जिला अध्यक्ष फलावर नकवी बसंत मिश्रा हरजीत सलूजा नाजिश फातिमा आदि प्रमुख लोग रहे।

पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी की जयंती सद्भावना दिवस के रूप में मनाई

ब्यूरो प्रमुख
विश्व प्रकाश श्रीवास्तव

जौनपुर। भारत रत्न एवं पूर्व प्रधानमंत्री स्व. राजीव गांधी की जयंती बुधवार को कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने जिला कांग्रेस कार्यालय राजीव भवन में सद्भावना दिवस के रूप में मनाई। इस दौरान कांग्रेस नेताओं और कार्यकर्ताओं ने उनके चित्र पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि दी और देश के विकास में उनके योगदान को याद किया। जयंती समारोह को संबोधित करते हुए जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष डॉ. प्रमोद कुमार सिंह ने कहा कि राजीव गांधी दूरदर्शी सोच वाले नेता थे। उनके उदार व्यक्तित्व और आधुनिक भारत के निर्माण की सोच ने देश की राजनीति और विकास की दिशा को प्रभावित किया। उन्होंने कहा कि राजीव गांधी को देश में सूचना एवं कंप्यूटर क्रांति का अग्रदूत माना जाता है। उन्होंने युवाओं को देश की मुख्यधारा से जोड़ने तथा आधुनिक तकनीक को बढ़ावा देने के लिए महत्वपूर्ण कार्य किए। डॉ. प्रमोद कुमार सिंह ने कहा कि राजीव गांधी ने पंचायती राज व्यवस्था को मजबूत करने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल की। उनका उद्देश्य सत्ता और विकास की प्रक्रिया में समाज के सभी वर्गों की भागीदारी सुनिश्चित करना था। उन्होंने कहा कि राजीव गांधी की सोच और उनके द्वारा किए गए कार्य आज भी प्रासंगिक हैं। इस अवसर पर कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने सद्भावना, एकता और भाईचारे की भावना को मजबूत करने का संकल्प लिया। कार्यक्रम में शहर कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष आरिफ खान, डॉ. राकेश मिश्र 'मंगला गुरु', जिला कांग्रेस कमेटी के उपाध्यक्ष राकेश मिश्रा, लाल प्रकाश पाल, राकेश सिंह डब्बू, अनिल सोनकर, निलेश सिंह सहित बड़ी संख्या में कांग्रेस कार्यकर्ता मौजूद रहे।

टीला लखनऊ में जलाभिषेक को लेकर हिन्दू महासभा त्रिदंडी ने कसी कमर

(डाक्टर अजय तिवारी जिला संवाददाता)

अयोध्या।अखिल भारत हिन्दू महासभा त्रिदंडी आगामी 24 अगस्त को उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ स्थित लक्ष्मण टीला स्थित टीलेश्वर महादेव मन्दिर में राष्ट्रीय अध्यक्ष ऋषि त्रिवेदी के नेतृत्व में सैकड़ों कार्यकर्ताओं ने जलाभिषेक करने के लिये कमर कस ली है। शान्तिपूर्ण ढंग से होने वाले इस कार्यक्रम को लेकर संगठन ने उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को लिखित रूप में पत्र भेजकर अवगत करा दिया है, ताकि जलाभिषेक कार्यक्रम को सफलतापूर्वक आयोजित कराने में पुलिस प्रशासन सहयोग करें।यह जानकारी हिन्दू महासभा त्रिदंडी के राष्ट्रीय मंत्री अधिवक्ता राकेश दत्त मिश्र ने दी। कल पार्टी मुख्यालय लखनऊ से जारी निर्देश के अनुसार संगठन के कार्यकर्ताओं एवं पदाधिकारियों को 24 अगस्त को संगठन मुख्यालय इंटीग्रल यूनिवर्सिटी कुर्सी रोड में पहुंचने के लिये निर्देशित किया गया है, वहां से प्रातः 11 बजे लक्ष्मण टीला स्थित टीलेश्वर महादेव मन्दिर में जलाभिषेक के लिये राष्ट्रीय अध्यक्ष ऋषि त्रिवेदी के नेतृत्व में रवाना होंगे। जारी बयान में राकेश दत्त मिश्र ने बताया कि बाहर से आने वाले सभी कार्यकर्ताओं एवं पदाधिकारियों की कई टीमें अलग–अलग रास्तों से सीधे लक्ष्मण टीला पर पहुंचेंगे। ज्ञात हो कि संगठन ने इसी माह के प्रारम्भ में जलाभिषेक कार्यक्रम

की घोषणा की थी और इसे सफलतापूर्वक आयोजित करने की रणनीति तैयार करने के लिये बीते दिनों प्रदेश के साथ–साथ जिला व नगर इकाईयों के पदाधिकारियों व कार्यकर्ताओं की बैठक भी आयोजित की जा चुकी है। बैठक में लक्ष्मण टीला स्थित टीलेश्वर महादेव मन्दिर में जलाभिषेक के लिये देश और प्रदेश से हजारों कार्यकर्ताओं के साथ सभी सनातनियों से पहुंचने का आह्वान करते हुये कार्यक्रम की सफलता को लेकर तैयार की गयी रूपरेखा पर मंथन किया गया था। जलाभिषेक कार्यक्रम को लेकर राष्ट्रीय अध्यक्ष ऋषि त्रिवेदी ने कहा कि भगवान राम के भाई लक्ष्मण जी की नगरी लखनऊ स्थित लक्ष्मण टीला के अस्तित्व को पूर्ववर्ती सरकारों और शासन–प्रशासन के अधिकारियों ने मिटाने का कार्य किया लेकिन अखिल भारत हिन्दू महासभा त्रिदंडी लक्ष्मण टीला पर लगे मुस्लिम आक्रांताओं की निशानियों को हटाकर वहां लक्ष्मण टीला और वहां स्थित टीलेश्वर महादेव मन्दिर में पूजा–पाठ के लिये अन्तिम समय तक संघर्ष करती रही और आगे भी करती रहेगी।श्री त्रिवेदी ने बैठक में पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं से स्पष्ट कहा कि 24 अगस्त को जलाभिषेक के लिये लक्ष्मण टीला जरूर पहुंचे।श्री त्रिवेदी ने बताया कि जलाभिषेक कार्यक्रम की अन्तिम रूप से तैयारी कर ली गयी है, जिसके बारे में पदाधिकारियों और कार्यकर्ताओं को भी अवगत करा दिया गया, जिससे कार्यक्रम को शांतिपूर्ण ढंग से सफलतापूर्वक आयोजित किया जा सके।

श्री कृष्ण दत्त एकेडमी ऑफ हायर एजुकेशन में नवप्रवेशित विद्यार्थियों के लिए ओरिएंटेशन कार्यक्रम 2026

ब्यूरो चीफ आर एल पाण्डेय

लखनऊ। श्री कृष्ण दत्त एकेडमी ऑफ हायर एजुकेशन, वृंदावन योजना, रायबरेली रोड, लखनऊ में बी.कॉम., बी.एड., बी.एफ.ए. एवं डी. फार्मा के नवप्रवेशित विद्यार्थियों के लिए ओरिएंटेशन कार्यक्रम 2026 का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को संस्थान की शैक्षणिक व्यवस्था, विभिन्न विभागों, अनुशासन, उपलब्ध सुविधाओं, पाठ्यक्रम संरचना एवं करियर के अवसरों से परिचित कराना था। कार्यक्रम का शुभारंभ श्री मनीष सिंह, निदेशक, एस.के.डी. ग्रुप ऑफ एजुकेशन, डॉ. नवीन कुलश्रेष्ठ, सहायक निदेशक (उच्च शिक्षा) एवं श्रीमती कुसुम बत्रा, सहायक निदेशक, एस.के.डी. ग्रुप ऑफ एजुकेशन द्वारा दीप प्रज्वलित कर किया गया। विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए श्री मनीष सिंह ने नवप्रवेशित विद्यार्थियों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि कॉलेज जीवन केवल डिग्री प्राप्त करने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह ज्ञान, व्यक्तित्व एवं कौशल के विकास का एक महत्वपूर्ण चरण है। उन्होंने विद्यार्थियों को अनुशासन बनाए रखने, नियमित अध्ययन करने, समय का प्रभावी प्रबंधन करने तथा शैक्षणिक एवं सह–पाठ्यक्रम गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों को उनके संबंधित विभागों, पाठ्यक्रम संरचना, शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया, शैक्षणिक अपेक्षाओं एवं करियर के अवसरों के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। विद्यार्थियों को कक्षाओं, प्रयोगशालाओं एवं अन्य शैक्षणिक सुविधाओं से भी परिचित कराया गया। सभी विभागाध्यक्षों ने अपने–अपने विभाग की गतिविधियों तथा विद्यार्थियों के लिए उपलब्ध विभिन्न अवसरों की जानकारी साझा की। नवप्रवेशित विद्यार्थियों ने कार्यक्रम में उत्साहपूर्वक भाग लिया तथा अपने नए शैक्षणिक वातावरण एवं संस्थान में उपलब्ध सुविधाओं के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त की।

सान्ध्य हिन्दी दैनिक देश की उपासना

स्वात्वाधिकारी में. प्रभुदयाल प्रकाशन की ओर से श्रीमती किरन देवी श्रीवास्तव मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक द्वारा देश की उपासना प्रेस, उपासना भवन, धर्मसारी, प्रेमपुर, जौनपुर उत्तर प्रदेश से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पादक
श्रीमती किरन देवी श्रीवास्तव
मो0 - 7007415808, 9415034002
Email - deshkiupasanadailynews@gmail.com

समाचार-पत्र से संबंधित समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र जौनपुर न्यायालय होगा।